विक्रम संवत् 2083 ▪ अधिमास/ज्येष्ठ/आषाढ़ मास (04) ▪ 01 जून 2026 ▪ मूल्यः 23 रु.

चरैवेति

भाजपा पर जनता का अटूट भरोसा

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69; डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26; पृष्ठ संख्या - 44; प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सोमनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की।

▪ केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने ''सार्वजनिक जीवन में श्री बी. एस. येदियुरप्पा के 50 वर्षों के योगदान'' पर आधारित कार्यक्रम को संबोधित किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने 'पंडित दीन दयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान' के तहत प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी असम की नई NDA सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने परमार्थ निकेतन स्वर्गाश्रम में साधु संतों से संवाद किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने ''नो बीजेपी'' (Know BJP) पहल के तहत 12 देशों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने श्री कडु मल्लेश्वर स्वामी जी के दर्शन एवं पूजा-अर्चना की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** ▪ संजय गोविन्द खोचे 04

▪ भाजपा का महाविजय अभियान

» **कवर स्टोरी** ▪ 05

▪ भाजपा पर जनता का अटूट भरोसा

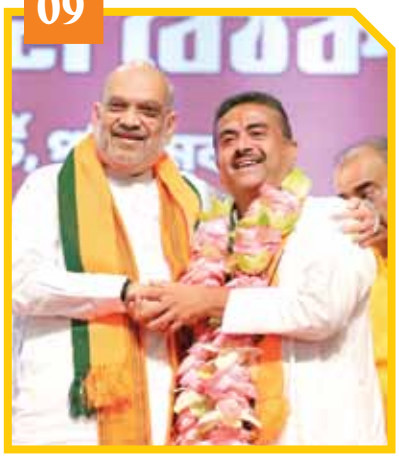

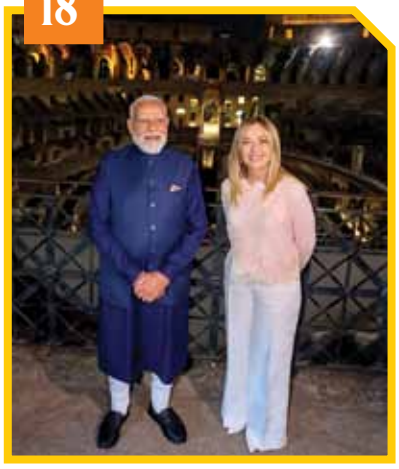

▪ कविता 08

» दूध में दरार पड़ गई

▪ पश्चिम बंगाल महाविजय 08

» विकास और विरासत का संकल्प - नितिन नवीन

» भय और हिंसा की राजनीति परास्त - अमित शाह

» असम में भाजपा की प्रचंड विजय - अमित शाह

» निर्ममता करेंगी तो कीमत चुकानी पड़ेगी - डॉ. मोहन यादव

» चुनाव सुशासन से जीते जाते हैं - हेमंत खण्डेलवाल

▪ पश्चिम बंगाल चुनाव विश्लेषण 15

» धन्यवाद, पश्चिम बंगाल, धन्यवाद - सीए अखिलेश जैन

» मोदी जी ने जादू कर दिया - योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

▪ दीर्घकालिक प्रतिबद्धता 18

» इटली और भारतः रणनीतिक और आर्थिक संपर्क क्षेत्र

▪ सोमनाथ अमृत महोत्सव 20

» सोमनाथ अमृत महोत्सव - प्रेरणा का महोत्सव - प्रधानमंत्री

» सोमनाथ स्वाभिमान का प्रतीक - डॉ. मोहन यादव

▪ आलेख 23

» नरेन्द्र मोदी विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता

» नरेन्द्र मोदी अपने आलोचकों को लगातार मात दे रहे हैं

» गंगा दशहरा जल के प्रति कृतज्ञता का पर्व

▪ मां सरस्वती लोक 27

» धार में विकास सुनिश्चित - डॉ. मोहन यादव

» भोजशाला का वैभव लौटेगा - हेमंत खण्डेलवाल

▪ बैठक - मीडिया विभाग 29

» योजनाएँ जन-जन तक पहुंचाना जिम्मेदारी - हेमंत खण्डेलवाल

» संगठन सर्वोपरि की भावना आवश्यक - डॉ. महेंद्र सिंह

▪ जिला बैठक 30

» भाजपा के लिए राष्ट्र हित सर्वोपरि - हेमंत खण्डेलवाल

» प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं से ही सशक्त संगठन - हेमंत खण्डेलवाल

▪ मन की बात 31

» सेवा के लिए अच्छी नीयत व लगातार प्रयास जरूरी-प्रधानमंत्री

» हमारी सरकार जो कहती है वह करती है -डॉ. मोहन यादव

» नवाचारों और राष्ट्र निर्माण के संकल्प को नई दिशा - हेमंत खण्डेलवाल

» सकारात्मक सोच का प्रसार - डॉ. महेन्द्र सिंह

▪ बलिदान दिवस 37

» रानी लक्ष्मीबाई

» रानी दुर्गावती

» बिरसा मुंडा वनवासियों के महानायक

▪ विचार प्रवाह 40

» समाज और विचारधारा

• मुख्य व्रत-त्यौहार

3. गणेश चतुर्थी व्रत, 11. कमला एकादशी, 12. प्रदोष व्रत, 13. शिव चतुर्दशी व्रत, 14. श्राद्ध अमावस्या, रोहिणी व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण, 15. स्ना. दा., सोमवती अमावस, 16. चन्द्रदर्शन, 17. रम्भा तीज व्रत, 18. विनायकी चतुर्थी व्रत, 19. श्रुत पंचमी, 23. महेश नवमी(माहेश्वरी समाज), 25. निर्जला एकादशी व्रत, 27. प्रदोष व्रत, 28. पाक्षिक प्रतिक्रमण, 29. द. वट पूर्णिमा व्रत, स्नानदान व्रत पूर्णिमा

• मुख्य जयंती-दिवस

5. विश्व पर्यावरण दिवस, 14. विश्व रक्तदान दिवस, 16. सिंधु सम्राट म. दाहरसिंह श.दि., 18. झाँसी रानी लक्ष्मीबाई बलि. दिवस, 21. अंतर्राष्ट्रीय योग एवं संगीत दिवस, 24. रानी दुर्गावती बलिदान दिवस, महर्षि गालव अवतरण दिवस, 26. विश्व नशा निरोधक दिवस

वर्ष-58, अंक : 04, भोपाल, जून 2026

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

अवसरवाद से राजनीति के प्रति लोगों का विश्वास खत्म होता जा रहा है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

भाजपा का महाविजय अभियान

चुनाव में मतदाताओं द्वारा सत्ता परिवर्तन तो कई बार होता आया है। मतदाताओं को सरकारें से मिलने वाली आशा/ निराशा वोट के माध्यम से जनादेश में बदल जाती है और सरकारें आती भी हैं और चली भी जाती हैं। इसी तरह इस बार का पश्चिम बंगाल का चुनाव आशा/ निराशा के मध्य था। तुष्टिकरण और संपूर्ण संतुष्टीकरण के बीच था। लोकतंत्र, संवैधानिक संस्थाओं और गुंडागर्दी, दहशत, लूट, हत्या, वोटबैंक, घुसपैठियों के मध्य था। पश्चिम बंगाल वह राज्य है, जहां स्वतंत्रता के 78 वर्षों बाद भी राजनीतिक दल अपना कब्जा बनाए रखने के लिए स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव की जगह तुष्टीकरण, घुसपैठ, डर, हिंसा को आम चुनाव जीतने का आसान राजनीतिक फार्मूला बनाकर उपयोग किया करते थे। इस कारण चुनाव का निर्णय नागरिकों द्वारा कम फॉर्मूला द्वारा ज्यादा तय होता था। इस बार का चुनाव एक अलग दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। इस चुनाव में एक तरफ स्थापित परंपराएं थीं जो पश्चिम बंगाल के राजनीतिक दलों के लिए सिद्ध व आसान रास्ता था और दूसरी तरफ भाजपा की तरफ से श्री नरेंद्र मोदी जी की गारंटी थी। संवैधानिक संस्थाओं के स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव सिद्ध करने के लिए किए गए प्रयास थे। जिनके बल पर मतदाताओं ने ऐतिहासिक 93 प्रतिशत मतदान कर स्थापित सत्ता को उसकी लोकप्रियता, जनता में स्वीकार्यता, जनता की आशा व जनता का विश्वास क्या बोल रहा है, स्पष्ट कर दिया अर्थात भाजपा का मोदी जी की गारंटी का बाण भाजपा का अमोघ बाण सिद्ध हुआ। अब विश्लेषण इस बात का होना चाहिए कि मोदी जी की गारंटी भाजपा का अमोघ बाण कैसे बना? और राजनीतिक दलों का जो अमोघ बाण जो अभी तक सिद्ध होता चला आ रहा था वह पिट क्यों गया, स्पष्ट है अभी तक पश्चिम बंगाल में मतदाताओं को स्थिर,मजबूत व स्थाई विकल्प की तलाश थी। जिस पर भरोसा किया जा सके। जो निराशा से बाहर निकालकर, आशा की किरण बन सके, घुसपैठियों से मुक्ति का वादा नहीं स्पष्ट भरोसा दे, भ्रष्टाचार मुक्त सरकार का नारा नहीं सिद्ध करके दिखा चुका हो, विनाश नहीं विकास के पथ पर चल चुका हो अर्थात जनता को भरोसे का ठोस आधार चाहिए था। उन्नत, सुरक्षित और प्रगतिशील भविष्य चाहिए था। यह सभी अपेक्षाएं मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा में स्पष्ट रूप से न केवल दिखाई दीं, बल्कि जनता को मोदी जी की गारंटी का अमोघ बाण भरोसे का ठोस आधार सिद्ध हुआ। मोदी जी की गारंटी का भरोसा भाजपा के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन देश के 22 राज्यों में जनता की पहली पसंद बनकर राज्यों में सत्तारूढ़ हो चुका है। सरकार बना लेना राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है पर सरकारों का सरकार में वापस बार-बार आना अति महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। भाजपा के प्रति मतदाताओं का ठोस भरोसा बार-बार सरकार में वापसी का कारण सिद्ध होता जा रहा है।

11 मई 2026 को सोमनाथ में देवाधिदेव महादेव की विग्रह प्रतिष्ठा के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सोमनाथ अमृत महोत्सव का आयोजन सोमनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना की याद दिलाता है। यह कोई साधारण अवसर नहीं है। यह अवसर हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र तभी लंबे समय तक मजबूत रह सकता है जब अपनी जड़ों से जुड़ा रहे। 75 वर्ष पहले जब पुनर्निमित सोमनाथ मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई थी तब भारत में एक नई चेतना यात्रा प्रारंभ की थी। सोमनाथ का मंदिर बार-बार तोड़ा गया, फिर हर बार उठ खड़ा हुआ। सोमनाथ मंदिर से सिद्ध होता है सृजन में विनाश को परास्त कर फिर नई ऊर्जा के साथ खड़े होने की ताकत होती है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में 13 धार्मिक लोकों का निर्माण कार्य चल रहा है। धार्मिक लोकों के विकास के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों में रह रहे लोगों के मध्य आपसी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर उपलब्ध होंगे। जिससे एकता की भावना में सुधार होगा। मध्य प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव जी ने धार में सरस्वती लोक व राजा भोज शोध संस्थान की स्थापना की घोषणा की है साथ ही साथ भोजशाला आंदोलन में शहीद तीनों शहीदों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपए की सहायता राशि देने की घोषणा की है। भोजशाला के गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित करने के प्रयासों से धार में विकास की नई संभावनाओं के द्वार खुलेंगे। राजा भोज के जल संरक्षण अभियान की तरह मध्य प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान से मध्य प्रदेश में जल संवर्धन की नई क्रांति आएगी।

भाजपा मध्य प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने मध्य प्रदेश भाजपा मीडिया विभाग की बैठक में मीडिया विभाग को नियोजित रणनीति के साथ संगठन व सरकार की सकारात्मक छवि को सुदृढ़ बनाने को प्राथमिकता बनाने को कहा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी ढंग से पहुंचना सभी की जिम्मेदारी है। प्रवक्ताओं को सक्रियता, जिम्मेदारी व समर्पण के साथ कार्य करते हुए संगठन की विचारधारा, नीति और उपलब्धियां को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाना है। जिससे संगठन व सरकार की विश्वसनियता और साख को मजबूती मिले।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने जिला बैठकों को संबोधित करते हुए भाजपा कार्यकर्ताओं का आव्हान किया कि पार्टी कार्यकर्ताओं की सेवा, समर्पण और संस्कारों से भाजपा संगठन मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है। कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से ही भाजपा राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत पर चलते हुए जनता की सेवा कर रही है। जिला प्रशिक्षण वर्गों के माध्यम से कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास बढ़ता है और संगठन को मजबूती मिलती है। प्रशिक्षित कार्यकर्ता ही सशक्त संगठन का सृजन करते हैं। भाजपा संगठन में प्रशिक्षण और सतत् संवाद की प्रक्रिया है जिससे भाजपा व अन्य दलों में अंतर स्थापित होता है। प्रशिक्षण में सतत् संवाद की प्रक्रिया से भाजपा आज विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनने में सफल हो चुका है। ■

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भाजपा पर जनता का अटूट भरोसा

गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक, हर जगह कमल खिल रहा है- पीएम मोदी

- **बंगाल अब भय से मुक्त होकर विकास और विश्वास की ओर अग्रसर है, यह है मोदी की गारंटी।**
- **"बदला नहीं, बदलाव" के नारे से बंगाल का भविष्य तय होना चाहिए।**
- **महिला मतदाताओं ने सशक्त संदेश दिया है- पीएम मोदी ने भारत की विकास यात्रा में 'नारी शक्ति' की अग्रणी भूमिका का समर्थन किया।**
- **गंगा से लेकर ब्रह्मपुत्र तक, भाजपा के गवर्नेंस मॉडल को जनता का अभूतपूर्व भरोसा मिल रहा है।**

पश्चिम बंगाल में भाजपा की महाविजय, ऐतिहासिक है...अभूतपूर्व है। जब वर्षों की साधना...सिद्धि में बदलती है...तो चेहरे पर जो खुशी होती है...वो खुशी देशभर के भाजपा के कार्यकर्ता के चेहरे पर है।

पश्चिम बंगाल में भाजपा की महाविजय, कई मायनों में खास है, विशेष है। ये देश के उज्ज्वल भविष्य की उद्घोषणा है। ये भरोसा है। भरोसा...भारत के महान लोकतंत्र पर...भरोसा... परफॉर्मेंस की पॉलिटिक्स पर। भरोसा...स्थिरता के संकल्प पर...भरोसा...एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना पर।

जय-पराजय, लोकतंत्र और चुनावी राजनीति का एक स्वाभाविक हिस्सा होता है। लेकिन जनता ने पूरे विश्व को दिखाया है...कि भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी क्यों है? लोकतंत्र... डेमोक्रेसी...सिर्फ एक तंत्र नहीं है... ये रगो में दौड़ता हुआ संस्कार है, रगो की संस्कार सरिता है। और सिर्फ भारत का लोकतंत्र ही नहीं जीता है... भारत का संविधान भी जीता है... संवैधानिक संस्थाएं जीती हैं... लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं जीती हैं।

पश्चिम बंगाल में करीब 93 परसेंट मतदान होना अपने आप में ऐतिहासिक रहा है। असम, तमिलनाडु, पुडुचेरी और केरलम में भी मतदान के नए रिकॉर्ड बने हैं। इसमें भी महिलाओं की भागीदारी अधिक रही है। ये भारतीय लोकतंत्र की सबसे उजली तस्वीर बन रही है।

बंगाल की जीत के साथ...गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक...कमल ही कमल खिला हुआ है... उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और अब पश्चिम बंगाल... मां गंगा के इर्द-गिर्द बसे राज्यों में बीजेपी-एनडीए सरकार है।

गंगा जी के साथ-साथ ब्रह्मपुत्र का भी हम पर बहुत आशीर्वाद रहा है। मां कामाख्या का आशीर्वाद रहा है। असम की जनता ने लगातार तीसरी बार, बीजेपी-एनडीए पर भरोसा किया है, हैट्रिक तीसरी बार। ये असम के इतिहास

की बहुत बड़ी घटना है। असम के टी-गार्डन्स वाले क्षेत्रों में भी बीजेपी को अभूतपूर्व समर्थन मिला है। श्रीमंत शंकरदेव जी...महायोद्धा लसित बोरफूकन जी...बोडोफा उपेंद्रनाथ ब्रह्मा जी...भूपेन हजारिका जी...ऐसे अनेक महान व्यक्तित्वों से प्रेरणा लेते हुए असम अपने विकास की रफ्तार अब और बढ़ाएगा।

2021 में हमने पुडुचेरी की जनता के सामने बेस्ट पुडुचेरी का विजन रखा था। पुडुचेरी की जनता ने उस विजन पर विश्वास जताया, हमें अपना आशीर्वाद दिया था। पिछले पांच वर्षों में हमारी एनडीए सरकार ने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ इस विजन को गति देने का काम किया। और आज...एक बार फिर पुडुचेरी की जनता ने एनडीए पर अपना विश्वास व्यक्त किया है।

आज देश के 20 से ज्यादा राज्यों में भाजपा-एनडीए की सरकारें हैं। हमारा मंत्र है- नागरिक देवो भव...हम जनता की सेवा में जुटे हुए हैं। और इसलिए जनता भाजपा पर ज्यादा से ज्यादा भरोसा कर रही है। जनता साफ देख रही है- जहां भाजपा वहां गुड गवर्नेंस...जहां भाजपा वहां विकास। आप बीते 2 साल के ट्रेंड को देखिए...हरियाणा में लगातार तीसरी बार बीजेपी सरकार बनी...महाराष्ट्र में बीजेपी की जोरदार विजय हुई। दिल्ली में अभूतपूर्व जीत हासिल हुई...बिहार में भी हमें पहले से बड़ी विजय मिली। और ये सफलता सिर्फ राज्यों के चुनाव में ही नहीं दिखी...ये सफलता लोकल गवर्नेंस के चुनाव में भी दिख रही है।

गुजरात के स्थानीय निकायों में बीजेपी, ढाई-तीन दशक से जनता की सेवा निरंतर कर रही है। और हर चुनाव में जनता...बीजेपी को आशीर्वाद के नए रिकॉर्ड बना रही है। गुजरात में इस बार बीजेपी को अब तक का highest वोट शेयर मिला है। ये भाजपा की गुड गवर्नेंस नीतियों की सफलता का बहुत बड़ा उदाहरण है।

डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1951 में जनसंघ की स्थापना करके...प्रत्येक कार्यकर्ता को ये संदेश दिया था कि देश के लिए जीना है और देश के लिए ही मरना है। उन्होंने अपने जीवन से साबित किया कि राष्ट्र सर्वोपरि का मंत्र लेकर चलने वाले...अपना जीवन देने में एक पल का भी संकोच नहीं करते।

डॉक्टर मुखर्जी जी ने पश्चिम बंगाल को भारत का हिस्सा बनाए रखने के लिए, एक बड़ी लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने जिस सशक्त और समृद्ध बंगाल का सपना देखा था...वो सपना कई दशकों से पूरा होने का इंतजार कर रहा था। 4 मई, 2026 को...बंगाल की जनता ने भाजपा कार्यकर्ताओं को वो अवसर दिया है।

बंगाल के भाग्य में 4 मई, 2026 से एक नया अध्याय जुड़ गया है। अब बंगाल भय मुक्त हुआ है...विकास के भरोसे से युक्त हुआ है।

इस जीत के साथ-साथ...वंदे मातरम् के डेढ़ सौवें वर्ष में भारत माता को... और ऋषि बंकिम जी को...बंगाल के लोगों ने अपना सादर नमन प्रेषित किया है। योगिराज श्री अरबिन्दो को भी मतदाताओं ने ऐतिहासिक श्रद्धांजलि दी है।

बंगाल में भाजपा के कितने ही कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन इस जीत के लिए समर्पित किया है...भाजपा की कितनी ही महिला कार्यकर्ताओं को तमाम अत्याचार सहने पड़े हैं...आप कल्पना नहीं कर सकते कि केरलम और बंगाल में भाजपा के हर कार्यकर्ता को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं, उन पर कितने जुल्म हुए हैं, कितने अत्याचार हुए हैं।

4 मई, 2026 की शाम भले ही ढल रही हो..लेकिन बंगाल की पावन धरा पर एक नया सूर्योदय हुआ है...एक ऐसा सवेरा, जिसका इंतजार पीढ़ियों ने किया है..भाजपा ने जितनी सीटें जीतीं...वो महज एक चुनावी आंकड़ा नहीं है। ये उस अडिग विश्वास की हुंकार है...जिसने डर, तुष्टीकरण और हिंसा की राजनीति को जड़ से उखाड़ फेंका है।

4 मई, 2026 से बंगाल के भविष्य की एक ऐसी यात्रा शुरू हो रही है...जहां विकास, अटूट विश्वास और नई उम्मीदें...कदम से कदम मिलाकर चलेंगी...। बंगाल में अब महिलाओं को सुरक्षा का माहौल मिलेगा...युवाओं को रोजगार मिलेगा...पलायन रुकेगा... आयुष्मान भारत योजना को हरी झंडी दिखाई जाएगी। घुसपैठियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होगी।

हमारा संकल्प भी वही होना चाहिए, जो गुरुदेव टैगोर का स्वप्न था...एक ऐसा परिवेश जहां मन भयमुक्त हो और सिर ऊंचा हो। और बीजेपी... बंगाल में ऐसा भयमुक्त वातावरण बनाकर दिखाएगी...ये मोदी की गारंटी है।

इस बार पूरे देश ने एक नई खबर सुनी... पश्चिम बंगाल में शांतिपूर्ण मतदान हुआ! पहली बार ऐसा हुआ कि चुनावी हिंसा में... एक भी निर्दोष नागरिक की जान नहीं गई। लोकतंत्र के इस महापर्व में बंदूक की आवाज नहीं... जनता-जनार्दन की आवाज गूँजी। पहली बार डर नहीं, लोकतंत्र जीता है।

बंगाल की चुनावी जो आदतें फैली हुई हैं, उसमें बदलाव आना चाहिए। आज जब भाजपा जीती है तो...''बदला'' नहीं, ''बदलाव'' की बात होनी चाहिए। भय नहीं भविष्य की बात होनी चाहिए। हिंसा का अंतहीन चक्र हमेशा के लिए खत्म होना चाहिए। किसने किसे वोट दिया...किसे नहीं दिया...उससे ऊपर उठकर बंगाल की सेवा के लिए काम करें।

इन राज्यों में चुनाव और उसके नतीजों की... एक और बहुत अहम बात है... इनकी टाइमिंग। जब इन राज्यों में जनता वोट डाल रही थी...तो इसी दौरान विश्व में जगह-जगह युद्ध के सायरन बज रहे थे...अस्थिरता और अराजकता का माहौल रहा...वैश्विक अर्थ-व्यवस्थाएं संकट में थीं...और उस दौरान... भारत का जन-जन स्थिरता के लिए वोट दे रहा था।

पश्चिमी एशिया में चल रहे संकट का पूरे विश्व पर बहुत बुरा असर पड़ा है। लेकिन भारत, पूरे सामर्थ्य से इस संकट का सामना कर रहा है। इस चुनाव परिणाम ने भी दिखाया है कि भारत इस चुनौती में भी एकजुट है, एकमत है, एक लक्ष्य से संकल्पित है। और वो लक्ष्य है, विकसित भारत। विकसित भारत का लक्ष्य लेकर के हम निकले हैं।

विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि में...पूर्वोद्य का बहुत बड़ा महत्व है। जब भारत समृद्ध था... आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सामर्थ्य के चरम पर था...तब उसके तीन मजबूत स्तंभ थे। ये स्तंभ थे

...अंग यानि आज का बिहार

...बंग यानि आज का बंगाल

...और कलिंग...यानि आज का ओडिशा

...कलिंग उस समय हिंद महासागर के समुद्री व्यापार का एकछत्र सम्राट था। कलिंग के बंदरगाह...पूरे एशिया तक भारत के उत्पादों को पहुँचाते थे। वहीं...अंग यानि आज का बिहार... सूत, रेशम और अन्य व्यापार के साथ-साथ...नालंदा और विक्रमशिला जैसे एजुकेशन सेंटर्स का भी हब था। और बंग यानि आज का बंगाल...वो सांस्कृतिक धरती थी जहाँ से भारत की आत्मा की आवाज उठती थी।

गुलामी के कालखंड में जैसे-जैसे, समृद्ध भारत के ये मजबूत पिलर कमजोर होते गए... भारत का सामर्थ्य भी क्षीण होता गया। इसलिए, विकसित भारत के निर्माण के लिए इन तीनों स्तंभों का फिर से मजबूत होना बहुत आवश्यक

है। और अंग, बंग और कलिंग (बिहार, बंगाल और ओडिशा) ने इस महाअभियान के लिए बीजेपी को चुन लिया है, एनडीए पर भरोसा किया है।

विकसित भारत के निर्माण का एक और महत्वपूर्ण पिलर...भारत की नारीशक्ति है। नारीशक्ति अब विकसित भारत के निर्माण में तेजी से आगे बढ़ रही है। लेकिन नारीशक्ति की इस रफ्तार को कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने रोकने का काम किया है। इन नारी विरोधी दलों ने संसद में नारीशक्ति वंदन संशोधन को पास नहीं होने दिया।

पूरे देश में आज एक भी राज्य ऐसा नहीं है जहां कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार हो। ये सिर्फ सियासत का बदलाव नहीं है, ये सोच का बदलाव है। ये बताता है कि विकसित होता हुआ भारत...किस दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। आज का भारत अवसर चाहता है, विकास चाहता है, विश्वास चाहता है। आज का भारत प्रगति चाहता है, स्थिरता चाहता है। और आज का भारत ऐसी राजनीति चाहता है जो देश को आगे बढ़ाए।

दुर्भाग्य से आज की कांग्रेस...बिल्कुल विपरीत दिशा में चल पड़ी है। ऐसे समय में, जब पूरा देश कम्युनिज्म से किनारा कर चुका है...कांग्रेस, उसी विचारधारा को अपनाने में लगी है जिसे देश ने ठुकरा दिया है। जो माओवाद जंगलों में समाप्त हो रहा है...वो अब कांग्रेस में अपनी जड़ें मजबूत कर चुका है। इसलिए कांग्रेस...अर्बन नक्सलियों का गिरोह बनती जा रही है। कांग्रेस को एक बात नहीं भूलनी चाहिए..जिस विचार को जनता ने ठुकराया...उसे जो अपनाएगा...जनता उसे भी ठुकराएगी।

आज देश का हर राज्य भी एक दूसरे से लड़कर नहीं....एक दूसरे के साथ मिलकर आगे बढ़ना चाहता है। इन चुनावों ने इस संदेश को भी बहुत स्पष्ट किया है। बंगाल, तमिलनाडु और केरलम में जिन तीन सरकारों को जनता ने सत्ता से बाहर किया...उनकी एक समान पहचान थी...विभाजन की राजनीति। यही उनकी पहचान थी। उनकी राजनीति जोड़ने की नहीं, तोड़ने की थी। कभी भाषा के नाम पर विवाद खड़ा किया गया, कभी खाने-पीने की आदतों को लेकर समाज को बाँटने की कोशिश हुई, और कभी अपने ही देश के लोगों को ''बाहरी'' तक कहा गया। लेकिन भारत की जनता ने इस राजनीति को साफ जवाब दिया है। देश ने बता दिया है कि उसे विवाद नहीं, विकास चाहिए...विभाजन नहीं, विश्वास चाहिए...।

आजादी के बाद कांग्रेस ने देश के करीब-करीब हर राज्य में सरकारें बनाईं। ये आजादी के आंदोलन का जो इमोशन था, उसका उनको लाभ मिला था, उसमें से उपजा जनादेश था। लेकिन जैसे-जैसे आजादी के आंदोलन का इमोशन से आगे निकलकर के देश... धरातल के काम पर लौटा... वैसे-वैसे कांग्रेस जनता का भरोसा खोती चली गई। बीते दशकों में... देश ने युवाओं की अनेक पीढ़ियां जोड़ी हैं। लेकिन कांग्रेस घटती ही चली गई है। कांग्रेस देश की संस्कृति को नहीं समझ पाई, देश की संवेदनाओं को समझ नहीं पाई। कांग्रेस एस्पिरेशन्स की राजनीति जानती ही नहीं है।

बीजेपी के लिए भारत और भारतीयता के भाव से बड़ा और कुछ भी नहीं है। हमारे लिए भारत सब कुछ है। भारतीयता सब कुछ है। और बीजेपी, सिर्फ नेशनल पार्टी है, इतना ही नहीं है...ये रीजनल एस्पिरेशन्स से नेशनल एंबिशन्स को पूरा करने वाली पार्टी है। इसलिए...बीजेपी, अपने विचार, विजन और विकास के विश्वास पर खरा उतरकर देश की पसंद बन रही है। जनता जनार्दन के आशीर्वाद प्राप्त कर रही है। भाजपा, परिवार की नहीं, जमीन से जुड़ी राजनीति करती है। इसलिए, आज नॉर्थ ईस्ट भाजपा से जुड़ता है। इसलिए, आज पूरा आदिवासी अंचल बीजेपी को इतना प्रचंड जनादेश दे रहा है। इसलिए, देश के मछुआरों का अभूतपूर्व समर्थन बीजेपी के साथ है। इसलिए, देश के किसानों की पसंद बीजेपी है। ■

दूध में दरार पड़ गई

खून क्यों सफेद हो गया?
भेद में अभेद खो गया।
बँट गए शहीद, गीत कट गए,
कलेजे में कटार गड़ गई।
दूध में दरार पड़ गई।

खेतों में बारूदी गंध,
टूट गए नानक के छन्द
सतलुज सहम उठी, व्यथित सी वितस्ता है,
वसंत से बहार झड़ गई।
दूध में दरार पड़ गई।

अपनी ही छाया से बैर,
गले लगने लगे हैं गैर,
खुदकुशी का रास्ता, तुम्हें वतन का वास्ता
बात बनाएँ, बिगड़ गई।
दूध में दरार पड़ गई।

अटल बिहारी वाजपेयी

विकास और विरासत का संकल्प - नितिन नवीन

पश्चिम बंगाल की जनता का बहुत-बहुत अभिनंदन है। पांच राज्यों में हुए चुनावों के लिए सभी राज्यों की जनता का भी बहुत-बहुत अभिवादन है। मां काली और मां कामाख्या की पवित्र भूमि में जो विजयश्री मिली है, उसके लिए हम मां काली के दरबार में मत्था टेकने आए हैं। मां काली, मां दुर्गा और मां कामाख्या हम सभी को आशीर्वाद दें, ताकि हम पश्चिम बंगाल और असम समेत पूरे भारत के विकास में योगदान दे सकें। हमारे नेता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, जो राष्ट्र नायक के रूप में लगातार इस देश में प्रधान सेवक के रूप में कार्य कर रहे हैं, वे विकास के साथ-साथ हमारी विरासत और संस्कृति को भी संजोते हुए आगे बढ़ा रहे हैं।

पश्चिम बंगाल की संस्कृति और विरासत को यदि किसी के नेतृत्व में आगे बढ़ाया जा सकता है, तो वह यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ही संभव है। हम यह भी मानते हैं कि पूरे देश की जनता ने वर्ष 2024 में जो कसक रह गई थी, उस कसक और जनता के मन में जो टीस थी, उसे कहीं न कहीं लगातार विजयश्री देकर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। हम मां काली के दरबार में आए, आशीर्वाद लिया है और यही कामना करते हैं कि पूरे देश, पश्चिम बंगाल और समस्त राज्यों में सुख-शांति और समृद्धि बनी रहे तथा विकास और विरासत के संकल्प के साथ हम आगे बढ़ें। ▪

भय और हिंसा की राजनीति परास्त - अमित शाह

घुसपैठिया मुक्त बंगाल, सुरक्षित महिलाएँ और सुरक्षित जनता भाजपा का जनता से वादा है।

अब सर्वोत्तम प्रदर्शन ही पार्टी का लक्ष्य है। अब विकास को कोई नहीं रोक सकता।

- **दिल की गहराई से शहीद कार्यकर्ताओं को नमन। भारतीय जनता पार्टी के 321 देवतुल्य कार्यकर्ताओं ने संगठन की जीत और विचार के लिए अपनी जान गंवाई है।**
- **मोदी जी ने कहा था कि पश्चिम और पूरब में समान विकास होना चाहिए, जिन लोगों ने पूरब को विकास से दूर रखा, वे सत्ता से बेदखल हुए।**
- **कांग्रेस का देशभर में सफाया हो रहा है और राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडी अलायंस भी समाप्त हो रहा है।**
- **बंगाल के 23 में से 9 जिलों में ममता दीदी का खाता तक नहीं खुला, सूपड़ा साफ हो गया।**
- **ममता दीदी को इस बार उनके घर में घुसकर हराया है.. इसके लिए भवानीपुर की जनता का हृदय से आभार।**
- **भाजपा की बंगाल जीत ने देश की सबसे बड़ी सुरक्षा खाई को भर दिया है, अब हम एक-एक घुसपैठिए को देश से बाहर निकालकर रहेंगे।**
- **मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार बंगाल को दिन दूनी, रात चौगुनी गति से आगे बढ़ाएगी।**

कम्युनिस्टों के बनाए माहौल को ममता बनर्जी ने और गहरे तरीके से भय में परिवर्तित किया। जिससे मत की अभिव्यक्ति लगभग असंभव थी। हिंसा और क्रूरता के सैकड़ों उदाहरणों के बीच बंगाल की जनता ने भारतीय जनता पार्टी और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर भरोसा कर प्रचंड विजय दी है। बंगाल की जनता ने जो अपेक्षाएँ रखी हैं और जिन आशाओं को संजोकर मैंडेट दिया है, उसे पूरा करने का पूरा प्रयास किया जाएगा। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का दायित्व है कि वे हर हाल में 'सोनार बांग्ला' के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ें।

कवि गुरु की यह पंक्तियाँ सच होती दिखाई पड़ रही हैं, ''चित्तो जेथा भयशून्य, उच्चो जेथा

शिर।'' जहाँ मन भयमुक्त हो और सिर गर्व से ऊँचा हो, ऐसे बंगाल का रास्ता प्रशस्त हो चुका है और बंगाल उस रास्ते पर चलेगा। पाँच दशक का लंबा समय लोकतंत्र, कानून और व्यवस्था, बंगाल की अर्थव्यवस्था के ह्रास तथा बंगाल के विकास को शून्य और नेगेटिव गति देने की दृष्टि से एक दुःस्वप्न जैसा रहा है।

बंगाल की संस्कृति और परंपरा को पाँच दशक से विदेशी विचारों से प्रभावित शासन से मुक्त कर, रामकृष्ण ठाकुर, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद और कवि गुरु टैगोर की कल्पना के बंगाल के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना है। विनम्रता और जिम्मेदारी के अहसास के साथ किया गया परिश्रम ही इस मैंडेट के लिए जनता के प्रति आभार के रूप में सच्चा जवाब हो सकता है।

बंगाल विजय अनेक दृष्टिकोणों से बहुत महत्वपूर्ण है। 100 साल की वैचारिक यात्रा के बाद गंगोत्री से गंगासागर तक हर जगह भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी,1950 से जिस विचार की लेकर निकले थे, उनकी ही जन्मभूमि में 2026 में डॉ. श्यामा प्रसाद जी की ही पार्टी की सरकार बन रही है, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब 370 हटी थी, तब देशभर के कार्यकर्ताओं के मन में खुशी की लहर दौड़ी थी, मगर कई वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने कहा था कि अभी भी कुछ कसर बाकी है। बंगाल में भाजपा का झंडा फहराना बाकी है। आज हम मानते हैं कि डॉ. श्यामा प्रसाद जी जहाँ पर भी होंगे, मुक्त मन से यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व को आशीर्वाद देते होंगे, क्योंकि इस नेतृत्व ने भारतीय जनता पार्टी को गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक पहुँचाया है। 2014 से निकली यह यात्रा अभूतपूर्व यात्रा है।

पुरुषार्थ, कौशल और प्रामाणिकता से जनमत को कैसे संजोया और विस्तृत किया जा सकता है, इसका दुनिया के लोकतंत्र में सबसे उत्कृष्ट उदाहरण 2014 से 2026 तक की भारतीय जनता पार्टी की यात्रा है। सिर्फ विचार नहीं फैला, बल्कि संगठन भी विस्तृत हुआ, विचारधारा भी मजबूत हुई। इसके साथ ही घर-घर तक विकास पहुँचाने का कार्य भी बहुत अच्छे तरीके से किया गया। पूरा देश इस बात के लिए पार्टी और उसके नेतृत्व, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को स्वीकृति देता है। यदि मैं बंगाल की ही बात करूं, तो जब मैं पार्टी का अध्यक्ष बना था, उस समय उपचुनाव आया था और वर्तमान प्रदेशाध्यक्ष श्री समिक भट्टाचार्य ने उपचुनाव जीतकर 2014 में पार्टी का खाता खोला था। 2016 में 3 सीटें हुईं, 2021 में 77 सीटें हुईं और 2026 में 207 सीटों के साथ भाजपा का मुख्यमंत्री बनने जा रहा है। यह यात्रा जितनी भव्य और आनंददायक है, उसका मार्ग उतनी ही असहनीय पीड़ा से भरा हुआ है। हम आज भी यह नहीं भूल सकते कि भारतीय जनता पार्टी के 321 देवतुल्य कार्यकर्ताओं ने संगठन की जीत और विचार के लिए अपनी जान गंवाई है।

केरल और पश्चिम बंगाल के अलावा कहीं भी क्रूर हिंसा का नग्न तांडव नहीं देखा गया है। पहले कम्युनिस्टों ने और फिर टीएमसी ने इस प्रकार का वातावरण बनाया। हृदय के भाव के साथ सभी 321 शहीद कार्यकर्ताओं के परिवारजनों को भावपूर्वक नमन करना चाहते हैं। उनके परिवार के स्वजनों ने बलिदान देकर पार्टी और उसके विचार को मजबूत किया है। शहिद कार्यकर्ताओं के परिजनों को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनका यह बलिदान पश्चिम बंगाल की सीमा को सुरक्षित कर पूरे भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी योगदान देगा। त्रिपुरा, असम और अब बंगाल में भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के साथ घुसपैठ असंभव होने वाली है। दृढ़ता के साथ बंगाल सरकार और भारत सरकार मिलकर इस सीमा को राष्ट्र की सुरक्षा के अभेद्य किले में परिवर्तित कर देंगी।

इस पूरी यात्रा में बंगाल की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को जन समर्थन दिया। गत चुनाव में भी पार्टी को समर्थन मिला था और 77 सीटें जीती थीं, लेकिन इस बार जो जन समर्थन मिला है, उसके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए भाजपा के कार्यकर्ता के नाते मेरे पास शब्द नहीं हैं। भाजपा विधायकों की जीत का औसत मार्जिन 28,000 वोट का है। 3 से 77 और 77 से 207 तक की यात्रा अभूतपूर्व रही है। 23 प्रशासनिक जिलों में से 9 जिले ऐसे हैं,

जहाँ ममता बनर्जी की पार्टी का खाता भी नहीं खुला और पूरी तरह सूपड़ा साफ हो गया। ऐसा प्रचंड जनादेश पहले कभी नहीं देखा। सरकार अच्छा प्रदर्शन करती है तब जनादेश मिलता है, लेकिन जहाँ विपक्ष के नेता को बोलने का अवसर नहीं दिया जाता, जनता की भावनाओं को उजागर करने का मौका नहीं मिलता, वहाँ 9 जिलों में सत्ताधारी दल का शून्य पर आ जाना केवल ईश्वर और बंगाल की जनता की कृपा का परिणाम है। जब चुनाव चल रहा था, तब चुनाव आयोग पर ढेर सारे सवाल उठाए गए। केवल टीएमसी ही नहीं, बल्कि उसके सभी साथियों द्वारा भी सवाल खड़े किए गए। उन्हीं लोगों से बड़ी विनम्रता के साथ पूछना चाहते हैं कि बंगाल में 93 प्रतिशत मतदान हुआ, जो आजादी के बाद सबसे अधिक है। टीएमसी की ओर से छापेमारी या बूथ कैप्चरिंग की एक भी शिकायत नहीं आई?

93 प्रतिशत मतदान हुआ और जिस राज्य में चुनाव के समय सैकड़ों लाशें गिरती थीं, वहाँ दोनों चरण बिना एक भी मृत्यु के संपन्न हुए। चुनाव आयोग, चुनाव आयोग के तहत काम करने वाले सभी सुरक्षा बलों, बंगाल सरकार के सभी कर्मचारियों और बंगाल पुलिस को भी हृदयपूर्वक हम अभिनंदन देना चाहते हैं। इन सभी ने जो कार्य किया है, उससे विश्वभर में लोकतंत्र का सकारात्मक संदेश गया है। 23 जिलों में से 20 जिलों में भारतीय जनता पार्टी नंबर-1 पार्टी बनी है। एक भी जिला ऐसा नहीं है, जहाँ भाजपा का विधायक नहीं है। पूर्व मेदिनीपुर की 16 की 16 सीटें, झाड़ग्राम, पुरुलिया, बांकुड़ा, दार्जिलिंग, कालिम्पोंग, जलपाईगुड़ी और अलीपुरद्वार की सभी सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की। गत चुनाव में श्री शुभेंदु अधिकारी ने ममता बनर्जी को नंदीग्राम में हराया था। मैंने ममता बनर्जी का एक इंटरव्यू देखा था, जिसमें वह कह रही थीं कि वह भाजपा के गढ़ में लड़ने के लिए गई थीं। इस बार तो श्री शुभेंदु अधिकारी ने उनके घर में आकर उन्हें हराया है। हम भवानीपुर की जनता का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं।

इस जीत का महत्व केवल भारतीय जनता पार्टी के विस्तार, पार्टी की विचारधारा के विस्तार तक भी सीमित नहीं है और न ही इसका महत्व केवल भाजपा-एनडीए के 21वें राज्य तक पहुँचने तक है। इस जीत का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इसने राष्ट्रीय सुरक्षा में मौजूद सबसे बड़े छेद को भरने का काम किया है। भारतीय जनता पार्टी ने वादा किया है कि न केवल बंगाल, बल्कि पूरे देश से एक-एक घुसपैठिए को चुन-चुनकर बाहर निकाला जाएगा और देश को घुसपैठिया मुक्त बनाया जाएगा। जो लोग इसे ध्रुवीकरण का मुद्दा बताते हैं, वह सही नहीं है। यह देश की सुरक्षा का मुद्दा है। इस प्रचंड विजय के साथ पनिहाटी की प्रत्याशी श्रीमती रत्ना देबनाथ माताओं-बहनों पर हुए अत्याचार के विरुद्ध एक प्रतीक बनकर महिलाओं को ढाढ़स देने का कार्य करती हैं। हींगलगंज की प्रत्याशी श्रीमती रेखा पात्रा संदेशखाली के अत्याचार के विरुद्ध सत्याग्रह की प्रतीक हैं। औसग्राम की प्रत्याशी श्रीमती कलिता मांझी दारुण गरीबी में जीवन जी रही बहनों के लिए आशा का केंद्र हैं, क्योंकि अब उन्हें यह विश्वास हुआ है कि उनका भी प्रतिनिधि विधानसभा में बैठता है। बंकिम बाबू के परिवार से श्रीमती सुमित्रा चट्टोपाध्याय जी भी भारतीय जनता पार्टी के साथ जुड़ी हैं। 'वंदे मातरम्' के माध्यम से बंकिम बाबू ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जो उद्घोषणा की थी, उसके 150 वें वर्ष में ही ईश्वर ने भारतीय जनता पार्टी को बंकिम बाबू की भूमि पर सरकार बनाने का अवसर दिया है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण और बड़ी बात है।

शांतिपूर्ण चुनाव आने वाले दिनों में बंगाल के लिए शुभंकर साबित होने वाला है। सभी दलों से अपील है कि सभी मिलकर आगे बढ़ें। लोकतंत्र मत की अभिव्यक्ति का उत्सव है, इसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं हो सकता। देश के अधिकांश राज्यों में चुनावी हिंसा समाप्त हो चुकी है और भारतीय जनता पार्टी की विशेष जिम्मेदारी है कि सभी दलों के सहयोग से यह सुनिश्चित किया जाए कि सरकार बनने के बाद किसी भी चुनाव में घपलेबाजी और हिंसा की खबर देशभर में न पहुँचे। यही हमारी जिम्मेदारी है और इसी उद्देश्य के लिए जनता ने हमें जनादेश दिया है। इसके लिए दृढ़ संकल्पित होना पड़ेगा। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की धैर्यपूर्ण साधना के कारण ही यह सिद्धि पार्टी को प्राप्त हुई है। जहाँ-जहाँ भारतीय जनता पार्टी शासन में आई है, वहाँ चुनावों में पारदर्शिता लाई गई है और हिंसा मुक्त चुनाव कराकर दिखाए गए हैं। आने वाले समय में ऐसा वातावरण बनाना सभी की जिम्मेदारी है, जिसमें जनता भयमुक्त होकर अपने मत की अभिव्यक्ति कर सके। इस कार्य में हम सभी दलों के सहयोग की अपेक्षा भी करते हैं।

कांग्रेस पार्टी कई वर्षों से अनेक स्थानों पर चुनाव नहीं जीत पा रही है। चुनाव जीतना उनके लिए असंभव होता जा रहा है, इसलिए वे चुनाव प्रक्रिया को ही कलुषित और बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। विपक्ष के नेता हार छिपाने के लिए ईवीएम, वोट चोरी, मतदाता सूची और एसआईआर जैसे मुद्दों पर कीचड़ उछालने का प्रयास कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी तो 2014 से शासन में आई है, लेकिन तमिलनाडु में 59 वर्षों से (1967 से)? पश्चिम बंगाल में 49 वर्षों से (1977 से)? सिक्किम में 42 वर्षों से (1984 से)? बिहार में 36 वर्षों से (1989 से)? गुजरात में 30 वर्षों से (1995 से)? ओडिशा में 26 वर्षों से (2000 से)? नागालैंड में 23 वर्षों से (2003 से)? महाराष्ट्र में 12 वर्षों से (2014 से)? कांग्रेस का

मुख्यमंत्री नहीं बना है। यदि यह सब वोट चोरी है, तो वोट चोरी करने वाले लोग कांग्रेस के साथ ही बैठे हैं, क्योंकि आज वे सभी 'इंडी एलायंस' के सदस्य हैं। कांग्रेस पार्टी को अपनी हार पर आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है। राहुल गांधी के नेता बनने के बाद देश की जनता धीरे-धीरे हर जगह कांग्रेस के खिलाफ जनादेश दे रही है। राहुल गांधी जी के नेतृत्व में ही 'इंडी एलायंस' के टूटने की शुरुआत भी हो गई है। जो लोग राजनीति में आत्मचिंतन नहीं करते और केवल तात्कालिक बहाने खोजते हैं, वे कभी विजय का यश प्राप्त नहीं कर सकते।

पश्चिम बंगाल में भाजपा की विजय पूरे पूर्वी भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। 2014 में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि पश्चिम और पूर्व, दोनों का विकास समान रूप से होना चाहिए। आज अंग, बंग, कलिंग और असम सहित पूरी बंगाल प्रेसीडेंसी भारतीय जनता पार्टी के ध्वज के नीचे आ गई है। जिन लोगों ने पूर्वी भारत को विकास से वंचित रखा, उन्हें सत्ता से बेदखल करने का कार्य पूरे पूर्वी भारत ने किया है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी 15 वर्षों के शासन में प्रशासन का राजनीतिकरण और राजनीति का अपराधीकरण हुआ, जिसके कारण विकास की कोई गुंजाइश नहीं बन पाई। पूरे बंगाल में सुशासन स्थापित होने की कोई व्यवस्था ही नहीं बची। भारतीय जनता पार्टी की ओर से बंगाल की जनता को विश्वास दिलाना चाहते हैं कि भाजपा के शासन में न प्रशासन का राजनीतिकरण होगा और न ही राजनीति का अपराधीकरण होगा। गुंडागर्दी, हिंसा, सिंडिकेट, भ्रष्टाचार और कट मनी के रूप में जो त्रासदी बंगाल की जनता झेल रही थी, वह नए मुख्यमंत्री के कार्यभार संभालते ही शीघ्र समाप्त हो जाएगी। बंगाल में विकास की कमी दिखाई देती है। आधुनिक खेती बंगाल तक पहुँच ही नहीं पाई है, उद्योग राज्य से बाहर चले गए हैं, इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने का विजन नहीं रहा और महिला सुरक्षा तथा नागरिक सुरक्षा की स्थिति अत्यंत खराब हो गई है। भारतीय जनता पार्टी ने इन सभी मुद्दों को अपने संकल्प पत्र में शामिल किया है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बनने वाली डबल इंजन सरकार बंगाल को दिन दूनी, रात चौगुनी गति से प्रगति की दिशा में आगे ले जाएगी। घुसपैठिया मुक्त बंगाल, सुरक्षित महिलाएँ और सुरक्षित जनता भाजपा का वादा है।

बंगाल के आर्ष दृष्टाओं ने जिस 'सोनार बांग्ला' का संकल्प और स्वप्न देखा है, उसे जमीन पर उतारना हम सबकी जिम्मेदारी है। बंगाल की जनता को अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन देना ही भारतीय जनता पार्टी का लक्ष्य है। भारत सरकार लगातार बंगाल के विकास के लिए प्रयास करती रही, लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लोकप्रिय हो जाएँगे, इस भय से ममता बनर्जी ने उन प्रयासों को सफल नहीं होने दिया। बहुत समय बाद ऐसा दिन आया है, जब राज्य में भी कमल की सरकार है और केंद्र में भी कमल की सरकार है, इसलिए अब विकास को कोई नहीं रोक सकता। एक बार फिर गोपाल कृष्ण गोखले का यह वाक्य सत्य साबित होगा कि ''बंगाल आज जो सोचता है, भारत कल सोचता है।'' ऐसा बंगाल बनाने की जिम्मेदारी देश की जनता ने भाजपा के कंधों पर रखी है। कला, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से पूरे भारत की पहचान कभी बंगाल से होती थी और भारतीय जनता पार्टी का पूरा प्रयास रहेगा कि इन सभी क्षेत्रों में बंगाल फिर से देश का नेतृत्व करे। ■

असम में भाजपा की प्रचंड विजय - अमित शाह

असम की जनता को ऐतिहासिक हैट्रिक जनादेश के लिए धन्यवाद।

- **यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार द्वारा पिछले 10 वर्षों में सुरक्षित, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील असम बनाने के लिए किए गए अथक प्रयासों का मजबूत समर्थन है।**

- **असम में एनडीए की लगातार तीसरी प्रचंड जीत इस बात का प्रमाण है कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन सरकार पर जनता का अटूट भरोसा है।**

असम विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिली प्रचंड विजय आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार के विकास और जनकल्याण कार्यों पर असम की जनता की मुहर है। इस ऐतिहासिक विजय के लिए असम की जनता का धन्यवाद।

असम की जनता को ऐतिहासिक हैट्रिक जनादेश के लिए धन्यवाद। यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार द्वारा पिछले 10 वर्षों में सुरक्षित, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील असम बनाने के लिए किए गए अथक प्रयासों का मजबूत समर्थन है। अपार स्नेह और समर्थन हमें और बेहतर सेवा देने तथा आपकी आकांक्षाओं को पूरा करने के हमारे संकल्प को और मजबूत करता है।

असम में एनडीए की लगातार तीसरी प्रचंड जीत इस बात का प्रमाण है कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन सरकार पर जनता का अटूट भरोसा है, जो असम को अशांति की भूमि से उम्मीद और विकास की भूमि में बदल रही है। इस शानदार सफलता के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नवीन, मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री दिलीप सैकिया तथा असम भाजपा और एनडीए के सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई। ■

निर्ममता करेंगी तो कीमत चुकानी पड़ेगी - डॉ. मोहन यादव

ममता जब निर्ममता करेंगी, तब उसकी कीमत तो चुकानी पड़ेगी। पश्चिम बंगाल सहित अन्य राज्यों में भाजपा की ऐतिहासिक विजय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व, केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी एवं भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी के मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओं द्वारा की गई अथक मेहनत व परिश्रम का सुखद परिणाम है। असम ने फिर एक बार घुसपैठियों के खिलाफ राष्ट्रवादी शक्तियों को राज्य की सेवा का अवसर दिया है। बंगाल आजादी के पहले से बहुत सक्षम-सशक्त और विकासपरक राज्य हुआ करता था, लेकिन दुर्भाग्य से पहले कांग्रेस, कम्युनिस्ट, फिर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के शासनकाल के कारण बंगाल आज देश में पिछड़ा राज्य बन गया है। इसका बड़ा कारण बंगाल का नेतृत्व रहा है। टीएमसी ने जिस प्रकार से पश्चिम बंगाल की दुरावस्था की थी, यह चुनाव परिणाम उसका ही प्रतिकार है। आज बंगाल में प्रचंड जीत के साथ भाजपा का झंडा लहरा रहा है।

> अंग-बंग-कलिंग सब तरफ लहरा रहा भाजपा का झंडा। भय की हार और मोदी जी के भरोसे की जीत है चुनाव परिणाम।
>
> प्रधानमंत्री जी की गारंटी देश की जनता के लिए सबसे बड़ा विश्वास बन चुकी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 22वां राज्य एनडीए के साथ खड़ा है। भाजपा के प्रति प्रेम दिखाने और निर्वाचन की पूरी प्रक्रिया में धैर्य बनाए रखने के लिये बंगाल की जनता बधाई की पात्र है। सभी हथकंडों को फेल करते हुए हिंसा, आतंक, अव्यवस्था और तमाम कठिनाइयों के बावजूद जनता अपने निर्णय के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ रही और भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत से जीती। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सुशासन की बयार चल रही है। ■

चुनाव सुशासन से जीते जाते हैं - हेमंत खण्डेलवाल

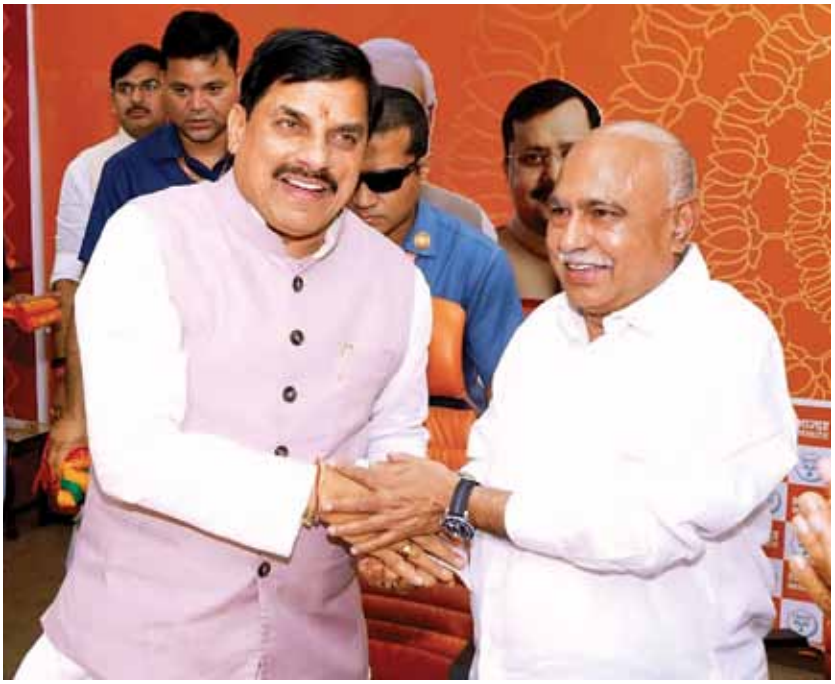

चुनाव परिणाम स्पष्ट बता रहे हैं कि इंडी गठबंधन को जनता ने पूरी तरह से नकार दिया।

राष्ट्र विरोधी ताकतों के खिलाफ जनता की अभिव्यक्ति है विधानसभा के चुनाव परिणाम।

- **प्रधानमंत्री जी के प्रति जनता के विश्वास और समर्थन का प्रतीक हैं विधानसभा चुनाव।**
- **इंडी गठबंधन हुआ खंड-खंड, राहुल गांधी पूरी तरह विफल।**

पश्चिम बंगाल, असम, पुडुचेरी सहित अन्य राज्यों के विधानसभा परिणामों ने स्पष्ट कर दिया कि चुनाव अब तुष्टिकरण व फेक मेनिफेस्टो से नहीं सुशासन से जीते जाते हैं। देशभर से आए नतीजों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आज देश की जनता के लिए 'मोदी की गारंटी' ही सबसे बड़ा विश्वास बन चुकी है। श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मभूमि पर कमल खिलना केवल राजनीतिक विजय नहीं, बल्कि भाजपा की विचारधारा पर जनता के विश्वास और आकांक्षाओं की जीत है। पश्चिम बंगाल का चुनाव 'ममता बनाम जनता' का चुनाव बन चुका था। जनता ने हिंसा, भय व भ्रष्टाचार की राजनीति को नकार दिया है। अब बंगाल में भय और हिंसा का कुशासन नहीं, भरोसे और विकास का सुशासन स्थापित होगी। जनता ने तृणमूल कांग्रेस के तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार, टोलाबाजी, सिंडिकेट राज और राजनीतिक हिंसा के खिलाफ स्पष्ट संदेश दिया है। असम में भाजपा सरकार लगातार तीसरी बार पहले से अधिक बहुमत के साथ बनना यह दर्शाता है कि भाजपा सरकारों के प्रति जनता में एंटी-इनकम्बेंसी नहीं, बल्कि प्रो-इनकम्बेंसी का माहौल है। पुडुचेरी में भी जनता ने पुनः एनडीए पर अपना विश्वास जताया है। तमिलनाडु में एनडीए की स्थिति पहले की तुलना में अधिक मजबूत हुई है और जनता ने डीएमके तथा इंडी गठबंधन की विभाजनकारी राजनीति को नकारा है। केरल में भाजपा को इस बार एक मजबूत और प्रभावी विकल्प के रूप में जनता का समर्थन प्राप्त हुआ है।

देश में लगातार 12 वर्षों तक केंद्र की सत्ता में रहने के बावजूद भाजपा का नए राज्यों में विस्तार होना, वोट शेयर का बढ़ना और जनता का बढ़ता विश्वास इस बात का प्रमाण है कि भाजपा आज देश की सबसे विश्वसनीय राजनीतिक शक्ति बन चुकी है। पूरे चुनाव के दौरान स्पष्ट दिखा कि राहुल गांधी इंडी गठबंधन को एकजुट रखने और प्रभावी नेतृत्व देने में पूरी तरह से विफल रहे। चुनाव परिणामों के बीच राहुल गांधी का विदेश में होना यह दर्शाता है कि वे गंभीर नेतृत्व देने में असफल रहे हैं। इंडी गठबंधन के दलों के बीच न समन्वय दिखा, न साझा दृष्टि और न ही कोई विश्वसनीय नेतृत्व। इस चुनाव परिणाम से स्पष्ट हो गया है कि इंडी गठबंधन अब पूरी तरह से बिखर चुका है। देश की जनता समझ चुकी है कि इंडी गठबंधन केवल अवसरवादी राजनीति का एक अस्थायी मंच था, जिसका कोई भविष्य नहीं है। आने वाले समय में इंडी गठबंधन पूरी तरह खंड-खंड होकर बिखर जाएगा और देश की राजनीति में उसकी प्रासंगिकता समाप्त हो जाएगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का नेतृत्व, केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी एवं भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी के कुशल मार्गदर्शन में पार्टी कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और जनता के आशीर्वाद से भाजपा को ऐतिहासिक बहुमत मिला है। ■

धन्यवाद, पश्चिम बंगाल, धन्यवाद

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद ..... न केवल धन्यवाद, बारम्बार धन्यवाद, हार्दिक बधाइयाँ। आपके दूरदृष्टिपूर्ण, साहसिक, सुविचारित व स्पष्ट जनादेश के लिए, एक बार फिर से बधाई व धन्यवाद।

सीए अखिलेश जैन

वास्तव में पश्चिम बंगाल की माताओं, बहनों, बेटियों, मतदाताओं, कार्यकर्ताओं, चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने में जी-जान से जुटे शासकीय अधिकारियों, कर्मचारियों, चुनाव आयोग, सुरक्षा बलों, न्याय का झण्डा बुलन्द कर लोकतंत्र की जड़ों को मजबूती प्रदान करने वाले ज्ञात/ अज्ञात सभी महानुभावों, विशिष्ट जनों, दैवीय शक्तियों के साथ-साथ भारत के संविधान निर्माताओं को जिन्होंने सत्ता की असली चाबी मतदाताओं को सौपीं है। विवेकपूर्ण, साहसिक व दूरदृष्टिपूर्ण निर्णय कि जितनी भी प्रशंसा की जावे वो छोटी ही प्रतीत होती है।

जब सत्ता की असली बागडोर संविधान निर्माताओं ने मतदाताओं को सौंपी है, तो जिस प्रकार हर अंधेरी रात की समय-सीमा समाप्ति के साथ-साथ सूर्योदय निश्चित है उसी प्रकार निरंकुश, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, दुराचारी, सनातन विरोधी, माताओं-बहनों -बेटियों, जो साक्षात् देवी रूप हैं, को सुरक्षा प्रदान करने में अक्षम, लोकतंत्र का उपहास उड़ाने वाली, देश की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक प्रगति में बाधक सत्ता का अन्त होना भी सुनिश्चित ही था।

चुनाव प्रारम्भ होने की बेला से चुनाव आयोग की चुनाव सम्पन्न होने की अधिसूचना जारी होने तक का मतदाताओं, कार्यकर्ताओं का समीप से अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ, मतदाताओं, कार्यकर्ताओं की मानसिक स्थिति को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। मतदाताओं, कार्यकर्ताओं से संवाद में चुनाव परिणामों की तस्वीर स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मतदान की तिथि तक का समय एक कल्प की तरह लम्बा लग रहा है।

इतनी बेसब्री मतदान के लिए, 90 प्रतिशत से अधिक मतदान, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मतदाताओं में मतदान की होड़ लग गई हो, देश-विदेश में बैठे पश्चिम बंगाल के मतदाता लाईन लगाकर, बेखौफ, मतदान के लिए जोश, जुनून के साथ लाईन में लग गये, 40 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान पर महिलाओं ने शत-प्रतिशत मतदान का निर्णय कर लिया। चाहे शहर हो, देहात हो, छोटा सा गांव, कस्बा, सूदूर जंगल में छोटी सी बस्ती हो, हर जगह शत-प्रतिशत मतदान की होड़ लगी थी, अगर इस मतदान के जोश की भावनाओं को समझ सकें तो चुनाव परिणाम मतदान की लाईन देखने मात्र से ही स्पष्ट था। मतदाताओं में राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी के प्रति विद्रोह, आक्रोश की ज्वाला धधक रही थी, जो उन्होंने मतदान शत-प्रतिशत करने को ठान कर अपने अन्तर्मन की ज्वाला को शान्त करने का मार्ग बनाया। ऐसा क्यों?

सत्तारूढ़ दल के प्रति इतना आक्रोश क्यों?

2-3 विधायकों वाली पार्टी 77 विधायकों तक पहुंचती है, फिर सीधे 207 विधायकों पर पहुँचती है। ऐसी स्वीकार्यता में बढ़ोत्तरी क्यों?

राजनैतिक विश्लेशकों का उत्तर भी बहुत स्पष्ट है व बहुत आसान है -कि SIR के कारण 90 लाख से अधिक घुसपैठिये मतदान प्रक्रिया से बाहर हो गये, सनातन का विरोध कर ध्रुवीकरण करने के प्रयासों से आम मतदाता चिढ़ गया था, आतंक, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, गुण्डागर्दी, महिलाओं के प्रति अपराधों का बढ़ता ग्राफ, बेरोजगारी, तुष्टीकरण व भविष्य अंधकारमय देख रहा था आम मतदाता। केंद्रीय बलों की उपस्थिति के कारण आम मतदाता वोट डालने का साहस कर पाया, इत्यादि, इत्यादि .....

पर एक और अति महत्वपूर्ण तर्क भी मतदाताओं को शांत नहीं बैठने दे रहा था, वो था, ममता सरकार में पश्चिम बंगाल मोदी सरकार के विकसित भारत@2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की दौड़ में शामिल नहीं हो रहा था, और अगर सरकार न बदली होती तो पश्चिम बंगाल भविष्य में भारत के नक्शे पर गरीब, बीमारू व उन्नति के पैमाने पर मार्ग के किनारे पर दुखी, लाचार सा खड़ा मिलता, बच्चों का भविष्य क्या होता, बच्चों को रोजी-रोटी की तलाश में देशभर में भटकना पड़ता और बेरोजगारी दर बढ़ते ही अपराध चरम पर पहुँच जाता अर्थात राज्य का आर्थिक ढांचा चरमराते ही भविष्य अंधकारमय हो जावेगा। भारी निराशा हावी थी, एफडीआई पश्चिम बंगाल का रास्ता भूल चुका था। इंवेस्टमेंट ने पश्चिम बंगाल से अपना नाता तोड़ लिया था। देशी विदेशी पर्यटक, धार्मिक पर्यटन, राज्य से निर्यात, कृषि, औद्योगिक उत्पादन, शिक्षा, स्वास्थ्य, अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा सब हाशिये पर जा चुका था। केन्द्रीय योजनाओं के लिए ममता सरकार दरवाजे बंद कर चुकी थी, इस प्रकार के प्रश्नों से न केवल पश्चिम बंगाल का नुकसान हो रहा था, बल्कि जिस तरह शरीर का कोई एक अंग बीमार हो जावे तो पूरा शरीर बीमार हो जाता है, उसी प्रकार देश के एक राज्य का प्रगति की दौड़ में पिछड़ना पूरे देश की प्रगति में घातक सिद्ध होता है। इसी कारण पश्चिम बंगाल के मतदाता, कार्यकर्ता, माताऐं-बहनें-बेटियाँ बहुत आदर के पात्र हैं जिन्होंने समय रहते सटीक निर्णय कर राज्य की बागडोर श्री नरेन्द्र मोदी जी को सौंप कर न केवल पश्चिम बंगाल को बर्बादी से बचा लिया बल्कि विकसित भारत@2047 व 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए खुले दिल से अपना सहयोग, समर्थन व आशीर्वाद प्रदान किया। अब श्री नरेन्द्र मोदी जी की जिम्मेदारी इस विश्वास को पूरा करने के लिए और भी अधिक बड़ गई है। आने वाली राज्य सरकार को जनता की भावनाओं, अपेक्षाओं व विश्वास को केन्द्र में रख कर बिना थके-बिना रुके चहुँमुखी विकास के लिए अत्यधिक प्रयास करने होंगे। ▪

(लेखक-भाजपा मप्र के कोषाध्यक्ष हैं)

मोदी जी ने जादू कर दिया

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव-2026, एक अति विशिष्ट चुनाव था। पूरा विश्व हजारों नेत्र लगाकर चुनाव प्रक्रिया का, चुनाव परिणामों का, बेहद शांत होकर अवलोकन कर रहा था, प्रतीक्षा कर रहा था। देश में पश्चिम बंगाल चुनाव के प्रति विशिष्ट प्रकार की, अलग ही तरह की रोचकता, इंतजार, बेसब्री व आँखों में चमक थी।

इस बेसब्री ने पश्चिम बंगाल चुनाव को विशिष्ट से अति विशिष्ट बना दिया था। राजनैतिक विश्लेषक अपनी-अपनी आस्था, विश्वास एवं अपेक्षाओं के हिसाब से चुनावी विश्लेषण का बाजार गर्म करने का प्रयास करने के लिए बेहद उत्सुक दिखाई दे रहे थे। पर बेचारे करते क्या?

मतदाताओं के चेहरे शांत थे, पर चेहरों पर जोरदार चमक, परिणामों का पूर्वाभास करवा रहे थे, स्पष्ट, मजबूत, ठोस व गंभीर संकेत दे रहे थे। मतदाताओं के चेहरों से इरादे समझ में आ रहे थें। बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़ने वालों ने पूरी पटकथा पढ़ भी ली थी, समझ भी ली थी।

यह चुनाव वास्तव में राजनैतिक दलों के चयन से कहीं ऊपर था।

पश्चिम बंगाल में 30 अप्रैल 1977 तक काँग्रेस के अंतिम मुख्यमंत्री के रूप में सिद्धार्थ शंकर रे ने कार्य किया। काँग्रेस का पश्चिम बंगाल से खाता बंद करने का श्रेय पाने के मजबूत दावेदार तथा योग्य अधिकारी भी हैं। जिन्होंने देश को आपातकाल के पिंजड़े में कैद करवा कर श्रीमती इंदिरा गाँधी के असंवैधानिक कार्यों में बढ़चढ़ कर सहयोग किया, हिस्सेदारी की थी व आपातकाल की आड़ में सम्पूर्ण विपक्ष समेत राज्य की जनता को मनमानी पुलिस कार्यवाही व ज्यादतियों की आग में झोंक दिया था, जिससे पश्चिम बंगाल, काँग्रेस के लिए वाटरलू सिद्ध हुआ।

1977 के विधानसभा चुनाव आये, काँग्रेस की तरफ से मतदाताओं को डराने-धमकाने, भयभीत करने, लालच देने का जी-तोड़ प्रयास किया गया। पर पश्चिम बंगाल के शांत मतदाताओं ने बेहद शांति के साथ काँग्रेस को दरवाजे का रास्ता दिखला दिया। काँग्रेस को रसातल में मिला दिया गया। हालात इतने बुरे हो गए कि शासन करने वाली काँग्रेस को 1977 के विधानसभा के आम चुनावों में 294 सदस्यीय विधानसभा में से मात्र 20 सीटें ही मिल पाईं। 10 प्रतिशत से भी कम? मुख्यमंत्री बनाने वाली काँग्रेस नेता प्रतिपक्ष बनाने की स्थिती में भी नहीं रही।

काँग्रेस के विकल्प के रूप में ज्योति बसु ने गठबंधन बना कर काँग्रेस की जड़ों में मठ्ठा डाल दिया। जिसके परिणाम स्वरूप आजतक काँग्रेस पश्चिम बंगाल में अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। पश्चिम बंगाल में शासन करने वाली काँग्रेस परजीवी काँग्रेस बनने के बाद भी आज भी हांफ रही है।

ज्योति बसु ने अपने शासनकाल में शासन की विशिष्ट प्रणाली अपनाई, लोकतंत्र के नाम पर सरकार बनाओ और सरकार बनते ही विपक्ष को जीवित ही नहीं रहने दो। विपक्ष हीन राज्य में मन माना, एक तरफा राज करते रहो, न मतदाताओं की बुनियादी आवश्यकताओं की चिंता, न घुसपैठ की चिंता, नक्सलवाद को आश्रय व संरक्षण, निरंकुश कार्यशैली, राज्य के आर्थिक विकास से कोई सरोकार नहीं, फिर परिणाम भी वही

हुआ जिसके बीज बोए थे, पानी जैसे ही सर से ऊपर बहने लगा, हिंसक तरीके अपना कर किसानों की भूमि अधिग्रहण करने का प्रयास किया तो ममता बनर्जी ने मतदाताओं

के आक्रोश को भाँप कर मौके का फायदा उठाया, और त्रस्त जनता ने ज्योति बसु की पार्टी का खाता ही बंद कर दिया। 20 मई 2011 से आज तक ज्योति बसु का गठबंधन सत्ता के लिए इंतजार ही कर रहा है। इससे भी बड़ी परेशानी इस बात की है कि भविष्य भी दिखाई नहीं दे रहा है।

ज्योति बसु के विरूद्ध जनता के आक्रोश को भड़का कर, आक्रोश की धरातल पर सत्ता पा कर ममता बनर्जी ने एक तरफा राज चलाना प्रारम्भ कर दिया। संविधान की भावना की कोई चिंता नहीं। वही सारी गलतियां करने में कोई देरी नहीं करी जिनके कारण काँग्रेस व कम्युनिस्ट अस्तित्व खो बैठे थे, वोट बैंक, भ्रष्टाचार, घुसपैठ, भाई-भतीजावाद, तुष्टीकरण, हिंसा, हत्या, महिलाओं की इज्जत के साथ खिलवाड़ का आतंक मचा दिया। ममता बनर्जी को हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान के आराध्य ''राम'' के नाम से भी चिढ़ मच गई, एक तरीके से ममता बनर्जी के राज में ''राम'' का नाम लेना अपराध हो गया। भारत के प्रधानमंत्री की योजनाओं का पश्चिम बंगाल में प्रवेश असंभव हो गया। घुसपैठियों एवं आतंक के सहयोग से, निष्कंटक राज करना प्रारम्भ कर दिया। उद्योग-धंधों ने पश्चिम बंगाल की हालात देख कर रास्ता भूलना प्रारम्भ कर दिया। बेरोजगारी, हिंसा, लूट-खसोट चरम पर पहुँच गया। न्यायालय के आदेश भी बेअसर होने लगे। महिला मुख्यमंत्री के राज में सरकार का महिला सुरक्षा से कोई सरोकार नहीं। घुसपैठ, हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार, हिंसा राज्य प्रायोजित हो गई, मतदाताओं का आक्रोश इतना बढ़ गया कि जनता की आँखें चुनाव की तिथि पर स्थिर हो गईं, चुनाव की तिथि का बेसब्री से इंतजार करने लगीं। चुनाव से बहुत पहले ही मतदाताओं के रूख से स्पष्ट हो गया था, मतदाताओं का निर्णय क्या होने वाला है?

संविधान निर्माताओं ने विधानसभा की अवधि समाप्त होने पर आम चुनाव की व्यवस्था की हुई है, अतः चुनाव की तिथियों की घोषणा हुई, चुनाव प्रक्रिया से फर्जी मतदाताओं को बाहर करना चुनाव आयोग का दायित्व है। पर चुनाव आयोग का यह दायित्व ममता दीदी की हिम्मत व पुनः सत्ता में आने का विश्वास तोड़ गया, फिर न्यायालय ने भी हिंसा ग्रस्त पश्चिम बंगाल में केन्द्रिय बलों की तैनाती को सही ठहराया। आतंक के साये में चुनाव करवाना अब संभव नहीं रहा। इसने मतदाताओं के मताधिकार के उपयोग के उत्साह को चरम पर पहुँचाया।

भाजपा 3 विधायकों के दल से 77 विधायकों का दल बना। फिर लम्बी व ऐतिहासिक छलांग लगा कर 207 सदस्यीय विधायक दल बना। 3 विधायकों व 77 विधायकों के जिम्मेदार प्रतिपक्ष की भूमिका के निर्वहन ने भाजपा के प्रति मतदाताओं में उत्साह का संचार किया। मोदी जी की गारण्टी ने मतदाताओं को अपना निर्णय सुनाने में मदद की। भाजपा संगठन व भाजपा संगठन की निष्ठाओं ने मतदाताओं को निर्णय लेने में मदद की।

पश्चिम बंगाल का मतदाता देश के विकास में भागीदार बनने के लिए छटपटा रहा था। पश्चिम बंगाल मोदी जी के साथ चलने के लिए बेचैन था। घुसपैठ, तुष्टीकरण, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, आये दिन हिंसा, हत्या, बलात्कार, घोटालों से मतदाता परेशान हो चुका था, ऊब चुका था, घृणा करने लग गया था। मुक्ति पाने का मन बना चुका था, अवसर की प्रतिक्षा में था। मतदाताओं में राष्ट्रवाद उखड़-उखड़ कर सामने आ रहा था। राज्य प्रायोजित हिंसात्मक गतिविधियों एवं वातावरण के डर से मतदाता शांत था, बेबस था, पर भीतर ही भीतर आक्रोशित था, आंदोलित था।

मतदाताओं के असंतोष, भाजपा संगठन, मोदी जी की गारण्टी व मोदी जी पर अटूट विश्वास के साथ- साथ मोदी जी के कार्यों के जादू का ही परिणाम था कि 93 प्रतिशत मतदान हुआ। शायद ही किसी लोकतांत्रिक देश में मतदाताओं में इतना उत्साह देखा गया हो, आश्चर्य से कम नहीं है। सरकार के प्रति इतना आक्रोश ममता बनर्जी भांप नहीं पाईं। ममता बनर्जी मोदी की गारण्टी की जादू समझ नहीं पाईं।

नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व ही मतदाताओं के लिए घोर अंधकार में आशा की किरण था।

इस चुनाव ने फिर एक बार सिद्ध किया है कि मतदाता ही देश का वास्तविक मालिक है, मतदाता सिर्फ देश हित की सोचता है, मतदाता सिर्फ और सिर्फ देश के लिए होता है, विकास का पक्षधर होता है, आर्थिक विकास के मार्ग में बाधाओं को रोड़ा समझ कर नष्ट कर देता है, राष्ट्रहित व राष्ट्र मतदाताओं के लिए सर्वोपरि होता है, घुसपैठ का सर्मथन सिरे से नकारता है, भ्रष्टाचारी से नफ रत करता है, भाई-भतीजावाद को समूल नष्ट कर देता है, शांति को पसंद करता है, संविधान की भावना के अनुरूप चलने वाली सरकार चाहता है, कानून का राज चाहता है।

ममता बनर्जी मतदाताओं की भावनाओं का सम्मान सत्ता के अहंकार के चलते एवं वोट बैंक के दबाब में, नहीं कर पाईं। मतदाताओं को लगी ठेस के कारण अब वह दिन दूर नहीं, जिस प्रकार काँग्रेस व कम्युनिस्ट पश्चिम बंगाल में इतिहास बन चुके हैं, अब ममता बनर्जी का दल भी इतिहास में दर्ज होकर रह जावेगा। ▪

(लेखक- चरैवेति पत्रिका के कार्यकारी संपादक हैं)

इटली और भारतः रणनीतिक और आर्थिक संपर्क क्षेत्र

भारत और इटली के बीच संबंध अब एक निर्णायक दौर में पहुंच चुके हैं। हाल के वर्षों में दोनों देशों के रिश्तों में अभूतपूर्व तेजी आई है और यह सौहार्दपूर्ण मित्रता से आगे बढ़कर स्वतंत्रता, लोकतंत्र और भविष्य को लेकर साझा विजन पर आधारित एक सच्ची स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप में बदल गए हैं।

ऐसे समय में जब अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था गहरे बदलाव के दौर से गुजर रही है, इटली और भारत की साझेदारी उच्च राजनीतिक और संस्थागत स्तर पर नियमित संवाद से आगे बढ़ रही है और अब एक नए तथा व्यापक आयाम हासिल कर रही है, जो हमारी आर्थिक गतिशीलता, सामाजिक रचनात्मकता और हजारों साल पुरानी सभ्यतागत समझ को साथ जोड़ती है। हमारा सहयोग इस साझा समझ को दर्शाता है कि 21वीं सदी में समृद्धि और सुरक्षा इस बात से तय होगी कि देश इनोवेशन, एनर्जी ट्रांजिशन के प्रबंधन और स्ट्रैटेजिक संप्रभुता को मजबूत करने में कितने सक्षम हैं। इसी उद्देश्य से हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों को और गहरा तथा डाइवर्स बनाने का संकल्प लिया है, ताकि नए लक्ष्यों को हासिल किया जा सके और एक-दूसरे की पूरक क्षमताओं का बेहतर उपयोग हो सके। हमारा लक्ष्य इटली की डिजाइन क्षमता, मैन्युफैक्चरिंग एक्सीलेंस और वर्ल्ड-क्लास सुपरकंप्यूटर्स, जो उसे एक इंडस्ट्रियल पावरहाउस बनाते हैं, को भारत की तेज आर्थिक ग्रोथ, इंजीनियरिंग टैलेंट, बड़े पैमाने की क्षमता, इनोवेशन और 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न तथा 2 लाख स्टार्ट-अप वाले एंटरप्रेन्योरशिप इकोसिस्टम के साथ जोड़कर मजबूत तालमेल बनाना है। यह केवल साधारण इंटीग्रेशन नहीं, बल्कि ऐसा साझा वैल्यू क्रिएशन है जिसमें दोनों देशों की औद्योगिक ताकतें एक-दूसरे को और मजबूत बनाती हैं।

यूरोपियन यूनियन और भारत के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट दोनों दिशाओं में ट्रेड और इनवेस्टमेंट बढ़ाने का रास्ता खोलता है। हमारा लक्ष्य 2029 तक इटली और भारत के बीच 20 बिलियन यूरो (2.24 लाख करोड़ रूपये) के ट्रेड टारगेट को हासिल करना और उससे आगे निकलना है। इसके लिए डिफेंस और एयरोस्पेस, क्लीन टेक्नोलॉजी, मशीनरी, ऑटोमोटिव कंपोनेंट्स, केमिकल्स, फार्मास्युटिकल्स, टेक्सटाइल, एग्री-फूड, टूरिज्म समेत कई सेक्टर्स पर फोकस किया जाएगा।

''मेड इन इटली'' हमेशा से पूरी वर्ल्ड में एक्सीलेंस का प्रतीक रहा है और आज इसकी स्वाभाविक साझेदारी ''मेक इन इंडिया'' पहल के हाई-क्वालिटी लक्ष्यों के साथ बन रही है।

ऐसे समय में जब अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था गहरे बदलाव के दौर से गुजर रही है, इटली और भारत की साझेदारी उच्च राजनीतिक और संस्थागत स्तर पर नियमित संवाद से आगे बढ़ रही है और अब एक नए तथा व्यापक आयाम हासिल कर रही है, जो हमारी आर्थिक गतिशीलता, सामाजिक रचनात्मकता और हजारों साल पुरानी सभ्यतागत समझ को साथ जोड़ती है।

इस संदर्भ में भारत के लिए प्रोडक्शन को लेकर इटली की कंपनियों की बढ़ती रुचि और इटली में भारतीय इंडस्ट्री की बढ़ती मौजूदगी, जिनकी संख्या अब दोनों तरफ से 1,000 से ज्यादा हो चुकी है, एक सकारात्मक संकेत है जो हमारी सप्लाई चेन के इंटीग्रेशन को और मजबूत करेगा।

टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन हमारी साझेदारी के केंद्र में है। आने वाले दशकों को ऐसी टेक्नोलॉजिकल क्रांति आकार देगी जिसका दायरा बेहद व्यापक होगा। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग, एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग, क्रिटिकल मिनरल्स और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे सेक्टर्स में तेज प्रगति शामिल है। भारत का डायनामिक इनोवेशन इकोसिस्टम, हाई स्किल्ड प्रोफेशनल टैलेंट पूल और इटली की एडवांस्ड इंडस्ट्रियल क्षमताएं इन सेक्टर्स में हमारे सहयोग को स्वाभाविक और रणनीतिक बनाती हैं। हमारी यूनिवर्सिटीज और रिसर्च सेंटर्स के बीच बढ़ती साझेदारी भी इसे मजबूत आधार देगी।

भारत का डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर पहले ही बड़ी संख्या में देशों, खासकर ग्लोबल साउथ में, अपनी मजबूत पहचान बना चुका है। खासतौर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब हमारे समाज और ग्लोबल अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डाल रही है। इटली और भारत लंबे समय से यह सुनिश्चित करने के लिए साथ काम कर रहे हैं कि AI डेवलपमेंट जिम्मेदारीपूर्ण और मानव-केंद्रित हो। इसी नजरिये से भारत और इटली AI को समावेशी विकास के एक मजबूत माध्यम के रूप में भी देखते हैं, खासकर ग्लोबल साउथ के लिए, जहां डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और सुलभ बहुभाषी टेक्नोलॉजी विभाजन बढ़ाने के बजाय उसे कम कर सकती हैं। टेक्नोलॉजी के केंद्र में इंसान को रखने वाले भारत के MANAV विजन और मानवीय परंपरा पर आधारित मानव-केंद्रित ''एल्गोर-एथिक्स'' को बढ़ावा देने में इटली की अग्रणी भूमिका के आधार पर हमारी साझेदारी यह सुनिश्चित करना चाहती है कि AI सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बने। हमारा दृष्टिकोण भारत की डिजिटल क्षमता को इटली की एथिकल और इंडस्ट्रियल विशेषज्ञता के साथ जोड़ता है, ताकि टेक्नोलॉजी मानव गरिमा की सेवा करे। सुरक्षित डिजिटल सहयोग, कैपेसिटी बिल्डिंग और मजबूत साइबर इंफ्र ास्ट्रक्चर से जुड़ी बेस्ट प्रैक्टिसेज को साझा करते हुए हमारा लक्ष्य ऐसा स्वतंत्र, भरोसेमंद और समान अवसर वाला डिजिटल स्पेस तैयार करना है, जिसमें हर देश AI को आकार देने और उससे लाभ उठाने में सक्षम हो। यही दृष्टिकोण इटली की GI प्रेसीडेंसी और नई दिल्ली में आयोजित AI इम्पैक्ट समिट 2026 के निष्कर्षों के केंद्र में है। AI को इंसानों द्वारा इंसानों के लिए बनाए गए एक माध्यम के रूप में देखने का मतलब यह स्पष्ट करना है कि टेक्नोलॉजी न तो लोगों की जगह ले सकती है, न उनके मौलिक अधिकारों को कमजोर कर सकती है और न ही इसका इस्तेमाल जनमत को प्रभावित करने या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बदलने के लिए होना चाहिए। तेजी से जुड़ती दुनिया में स्वतंत्रता और मानव गरिमा की रक्षा को लेकर हमारा दृष्टिकोण इसी चुनौती पर आधारित है।

हमारा सहयोग स्पेस सेक्टर तक भी फैला हुआ है। स्पेस एक्सप्लोरेशन और सैटेलाइट टेक्नोलॉजी में भारत की प्रभावशाली प्रगति, साथ ही एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में इटली की उत्कृष्ट क्षमता, संयुक्त पहलों और अगली पीढ़ी की टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट के लिए बड़े अवसर प्रदान करती है।

सिक्योरिटी और स्टेबिलिटी देशों की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए बेहद जरूरी बनी हुई हैं। इटली और भारत डिफेंस, सिक्योरिटी और स्ट्रैटेजिक टेक्नोलॉजी जैसे सेक्टर्स में अपने सहयोग को और मजबूत करना चाहते हैं। हमारा सहयोग महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ आतंकवाद, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक नेटवर्क, ड्रग तस्करी, साइबर क्राइम और मानव तस्करी जैसे खतरों के खिलाफ मजबूती बढ़ाने में मदद करेगा।

एनर्जी हमारी साझेदारी का एक और प्रमुख स्तंभ है। डाइवर्सिफाइड एनर्जी सोर्सेज की ओर बढ़ रहे ग्लोबल ट्रांजिशन के लिए इनोवेशन, इनवेस्टमेंट और सहयोग की जरूरत है। भारत और इटली रिन्यूएबल एनर्जी से लेकर हाइड्रोजन टेक्नोलॉजी तक, और स्मार्ट ग्रिड से लेकर मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर तक कई क्षेत्रों में साथ काम कर रहे हैं। ग्रीन हाइड्रोजन एक्सपोर्ट हब बनने की भारत की पहल जहां अपार संभावनाएं प्रदान करती है, वहीं यह रिन्यूएबल इंफ्रास्ट्रक्चर में इटली की एडवांस्ड टेक्नोलॉजी और यूरोप के लिए एनर्जी गेटवे के रूप में उसकी रणनीतिक भूमिका के साथ पूरी तरह मेल खाती है। इस संदर्भ में भारत की अगुवाई वाली प्रमुख पहलों, इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA), कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (CDRI) और ग्लोबल बायोफ्यूल्स अलायंस (GBA) में अन्य देशों के साथ हमारा सहयोग भी महत्वपूर्ण है।

फिजिकल, डिजिटल और मानवीय कनेक्टिविटी वह कड़ी है जो हमें एक साथ जोड़ती है। भारत और इटली दोनों ग्लोबल अर्थव्यवस्था के दो अहम केंद्रों, इंडो-पैसिफिक और मेडिटेरेनियन, के मध्य स्थित हैं। इन क्षेत्रों को अलग-अलग दायरों के रूप में नहीं, बल्कि तेजी से एक-दूसरे से जुड़ते हुए क्षेत्रों के रूप में देखा जाना चाहिए।

दरअसल, हम उस उभरते हुए ''इंडो-मेडिटेरेनियन'' को देख रहे हैं, जो ट्रेड, टेक्नोलॉजी, एनर्जी, डेटा और विचारों का एक महत्वपूर्ण कॉरिडोर बनता जा रहा है, जो हिंद महासागर को यूरोप से जोड़ता है। इसी आपस में जुड़े हुए क्षेत्र में हमारे संबंध स्वाभाविक रूप से एक विशेष स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप में विकसित हो रहे हैं, जो दो महाद्वीपों को जोड़ते हुए नई ग्लोबल डायनामिक्स को आकार दे रही है।

इसी संदर्भ में इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर हमारे क्षेत्रों को मॉडर्न ट्रांसपोर्ट और इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल नेटवर्क, एनर्जी सिस्टम और मजबूत सप्लाई चेन के जरिए जोड़ने की एक दूरदर्शी पहल है। भारत और इटली इस विजन को हकीकत में बदलने के लिए अन्य साझेदार देशों के साथ मिलकर काम करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।

हम अपनी साझा चुनौतियों का समाधान दोनों देशों के बीच गहरी साझेदारी और दीर्घकालिक सांस्कृतिक संबंधों के आधार पर कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति में ''धर्म'' की अवधारणा उस जिम्मेदारी की भावना को दर्शाती है, जो हमारे कार्यों का आधार बननी चाहिए, जबकि ''वसुधैव कुटुम्बकम'', यानी ''पूरी दुनिया एक परिवार है'', का सिद्धांत आज के आपस में जुड़े डिजिटल युग में गहराई से प्रतिध्वनित होता है। ऐसे मूल्य इटली की पुनर्जागरण काल से जुड़ी मानवतावादी परंपरा में भी स्वाभाविक रूप से दिखाई देते हैं, जो हर व्यक्ति की गरिमा और समाजों तथा लोगों को जोड़ने में संस्कृति की शक्ति को महत्व देती है।

इसलिए हमारा साझा विजन लोगों को केंद्र में रखकर मजबूत और भविष्योन्मुखी भारत-इटली साझेदारी की नींव रखना है। ▪

(लेखक- भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी हैं)

सोमनाथ अमृत महोत्सव - प्रेरणा का महोत्सव - प्रधानमंत्री

- **सोमनाथ मंदिर अटूट आस्था, दिव्यता और भारत की शाश्वत आत्मा के पवित्र प्रतीक के रूप में खड़ा है।**
- **75 साल पहले सोमनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना कोई साधारण घटना नहीं थी, अगर 1947 में भारत आजाद हुआ था, तो 1951 में सोमनाथ की प्राण प्रतिष्ठा ने भारत की स्वतंत्र चेतना का उद्घोष किया था।**
- **लुटेरों ने सोमनाथ मंदिर का वैभव मिटाने का प्रयास किया, सोमनाथ को केवल एक भौतिक ढांचा मानकर उससे टकराते रहे, बार-बार मंदिर को तोड़ा गया, ये बार-बार बनता रहा, हर बार उठ खड़ा होता रहा।**
- **सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण भी हुआ और देश ने सदियों के कलंक को भी धो दिया।**
- **सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र तभी लंबे समय तक मजबूत रह सकता है, जब वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहे।**

समय खुद जिनकी इच्छा से प्रकट होता है, जो स्वयं कालातीत हैं, जो स्वयं कालस्वरूप हैं, उन देवाधिदेव महादेव की विग्रह प्रतिष्ठा के हम 75 वर्ष मना रहे हैं। ये सृष्टि जिनसे सृजित होती है, जिनमें लय हो जाती है, यतो जायते पाल्यते येन विश्वं, तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्! हम उनके धाम के पुनर्निर्माण का उत्सव मना रहे हैं। जो हलाहल को पीकर नीलकंठ हो गए, उन्हीं की शरण में यहां सोमनाथ अमृत महोत्सव हो रहा है। ये सब भगवान सदाशिव की ही लीला है।

प्रथम विध्वंस के 1000 वर्ष बाद भी सोमनाथ के अविनाशी होने का गर्व और

आधुनिक स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा के 75 वर्ष, हम केवल दो आयोजनों का हिस्सा भर नहीं, हमें हजार वर्षों की अमृत यात्रा को अनुभव करने का शिव जी ने मौका दिया है।

75 साल पहले, सोमनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना, ये कोई साधारण अवसर नहीं था। 1947 में भारत आजाद हुआ था,1951 में सोमनाथ की प्राण प्रतिष्ठा ने भारत की स्वतंत्र चेतना का उद्घोष किया था। सरदार साहब ने सोमनाथ के पुनर्निर्माण से दुनिया को बताया था, भारत केवल आजाद नहीं हुआ है, भारत अपने प्राचीन गौरव को पुनः हासिल करने के मार्ग पर भी अब आगे बढ़ चुका है।

विनाश में सृजन के संकल्प को, जिसे सोमनाथ ने चरितार्थ किया है। असत्य पर सत्य की विजय को, जिसे प्रभास-पाटन ने बार-बार जिया है। हजारों वर्षों की आध्यात्मिक चेतना को, जिसने मानव मात्र के कल्याण की सीख समूचे विश्व को दी है। भारत के उस अविनाशी स्वरूप को, जिसे सदियों के कुत्सित प्रयास भी न मिटा सके, न हरा सके। सोमनाथ अमृत महोत्सव, ये केवल अतीत का उत्सव नहीं है, ये अगले एक हजार वर्षों के लिए भारत की प्रेरणा का महोत्सव भी है।

11 मई 1998, देश ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया था। देश ने 11 मई को पहले तीन परमाणु परीक्षण किए। हमारे वैज्ञानिकों ने भारत के सामर्थ्य को, भारत की क्षमता को, वैज्ञानिकों ने दुनिया के सामने रखा, दुनिया में तूफान आ गया। भारत, उसकी ये हैसियत, कौन होता है भारत, जो परमाणु परीक्षण करें और दुनिया की आंखें लाल हो गई, दुनिया भर की शक्तियां भारत को दबोचने के लिए मैदान में उतरी। अनेक प्रकार के बंधन लग गए। संभावनाओं के रास्ते सारे के सारे बंद कर दिए गए। कोई भी हिल जाता। जब दुनिया भर की बड़ी-बड़ी शक्तियां इतना बड़ा आक्रमण कर दे, तो आगे के रास्ते दिखते नहीं है। लेकिन हम कोई और मिट्टी के बने हुए हैं। 11 मई के बाद दुनिया हम पर टूट पड़ी थी। 11 मई को वैज्ञानिकों ने अपना काम कर लिया था। लेकिन 13 मई को फिर दो और परमाणु परीक्षण हुए, उससे दुनिया को पता चला था कि भारत की राजनीतिक इच्छाशक्ति कितनी अटल है। उस समय पूरी दुनिया का दबाव भारत पर था, लेकिन अटल जी के नेतृत्व में बीजेपी सरकार ने ये दिखाया था कि हमारे लिए राष्ट्र प्रथम है। दुनिया की कोई ताकत भारत को झुका नहीं सकती, दबाव में नहीं ला सकती।

देश ने पोखरण परमाणु परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया था। क्योंकि, शिव के साथ शक्ति की आराधना, ये हमारी परंपरा रही है। अर्धनारीश्वर शिव स्वयं भी शक्ति के साथ ही पूर्ण होते हैं। जब देश का मिशन चंद्रयान सफल हुआ था, तब चंद्रमा पर जहां भारत का रोवर लैंड हुआ, उस जगह का नाम भी हमने 'शिवशक्ति पॉइंट' रखा है। क्योंकि, हमारी आस्था में चंद्रमा शिव से जुड़ा है और शिव शक्ति से जुड़े हैं। और ये कितना सुखद है कि चंद्रमा के नाम से ही इस ज्योतिर्लिंग को हम सोमनाथ कहते हैं।

शिव और शक्ति की हमारी आराधना का जो विचार है, वो देश की वैज्ञानिक प्रगति के लिए भी प्रेरणा बने, आज हम ये संकल्प

साकार होते देख रहे हैं।

जिसके नाम में ही सोम अर्थात् अमृत जुड़ा हो, उसे नष्ट कौन कर सकता है? इतिहास के लंबे कालखंड में इस मंदिर ने कितने ही आक्रमण झेले। महमूद गजनवी, अलाउद्दीन खिलजी जैसे अनेक आक्रांता आए, लुटेरों ने सोमनाथ मंदिर का वैभव मिटाने का प्रयास किया। वो सोमनाथ को एक भौतिक ढांचा मानकर उससे टकराते रहे। बार-बार इस मंदिर को, इस ढांचे को तोड़ा गया। और ये बार-बार बनता रहा, हर बार उठ खड़ा होता रहा, क्योंकि तोड़ने वालों को मालूम नहीं था, हमारे राष्ट्र का वैचारिक सामर्थ्य क्या है। हम भौतिक शरीर को नश्वर मानने वाले लोग हैं। लेकिन, हम जानते हैं, उसके भीतर बैठी आत्मा अविनाशी है। और फिर तो, शिव तो सर्वात्मा हैं। इसलिए, अलग-अलग काल में, अलग-अलग जीवों की संकल्प शक्ति में शिव प्रकट होते रहे। राजा भोज, कभी राजा भीमदेव प्रथम, कभी राजा कुमारपाल, कभी राजा महीपाल प्रथम, तो कभी राव खंगार, ऐसे अनेक शिवभक्त समय-समय पर सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करवाते रहे। लकुलीश और सोम शर्मा जैसे कितने मनीषी, उन्होंने प्रभास पाटन क्षेत्र की विरासत को संरक्षित किया, इसे शैव साधना और दर्शन का महान केंद्र बनाया। भाव बृहस्पति, पाशुपताचार्यों और अनेक विद्वानों ने इस तीर्थ की आध्यात्मिक परंपराओं को जीवित रखा। विशालदेव और त्रिपुरांतक जैसे व्यक्तित्वों ने यहां की बौद्धिक चेतना को सुरक्षित रखने का पुनीत कार्य किया।

वीर हमीरजी गोहिल, वीर वेगड़ाजी भील, पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर जी, बड़ौदा के गायकवाड़, जाम साहब महाराजा दिग्विजय सिंह जी, ऐसी कितनी ही महान विभूतियाँ हैं, जो सोमनाथ की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पित करती थीं। इस अवसर पर सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, श्रीमान के. एम. मुंशी जी, ऐसी सभी ज्ञात-अज्ञात दिव्यात्माओं को भी श्रद्धा पूर्वक, आदर पूर्वक नमन। उनका स्मरण हमें ये प्रेरणा देता है कि हमें न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाना है, बल्कि इस जिम्मेदारी को आने वाली पीढ़ियों के हाथों में सौंपकर भी जाना है।

हमारे सांस्कृतिक स्थल हजारों वर्षों से भारत की पहचान रहे हैं। इतनी समृद्ध विरासत हमें मिली है। लेकिन, हमने दशकों तक उसके महत्व को नहीं समझा। दुनिया में ऐसे कितने ही उदाहरण हैं, जहां विदेशी हमलावरों ने राष्ट्रीय पहचान से जुड़े स्थलों को नष्ट किया। लेकिन, जब उस देश के लोगों को मौका मिला, सबने साथ आकर, अपनी पहचान को फिर से सहेजा, फिर से संवारा, पुनः प्रतिष्ठा की। लेकिन, हमारे यहाँ राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़े विषयों पर भी राजनीति होती रही। सोमनाथ खुद इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आजादी के बाद पहले दायित्वों में से एक था कि सोमनाथ मंदिर का पुनरुद्धार करते। इसलिए, सरदार वल्लभ भाई पटेल और डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी, उन्होंने इसके लिए इतने प्रयास किए। लेकिन, उन्हें इसके लिए नेहरूजी द्वारा कितना विरोध झेलना पड़ा था। लेकिन ये सरदार साहब की इच्छा शक्ति थी कि इतने विरोध के बावजूद सरदार साहब डिगे नहीं। सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण भी हुआ और देश ने सदियों के कलंक को भी धो दिया।

दुर्भाग्य से देश में ऐसी शक्तियां आज भी प्रभावी हैं, जिन्हें राष्ट्रीय स्वाभिमान से ज्यादा तुष्टिकरण जरूरी लगता है। राममंदिर निर्माण जैसे अवसरों पर भी हमने देखा है, किस तरह राम मंदिर निर्माण का भी विरोध किया गया। हमें ऐसी मानसिकता से सावधान रहना है। इस तरह की संकुचित राजनीति को हमें पीछे छोड़ना होगा। हमें विकास और विरासत को साथ लेकर के आगे बढ़ना होगा।

आज काशी में सदियों बाद बाबा विश्वनाथ धाम का इतना भव्य विस्तार हुआ है। उज्जैन में महाकाल, महालोक के विशाल दर्शन भी हमें हो रहे हैं। केदारनाथ धाम का पुनर्निर्माण भी हुआ है। अयोध्या में 500 साल की प्रतीक्षा भी पूरी हुई है। आज वहाँ भव्य मंदिर में रामलला विराजमान हैं।

ऐसे कितने ही पवित्र तीर्थ, पवित्र मठ, मंदिर और क्षेत्र, उनकी जो महिमा हमने पुराणों में सुनी है, आज वहाँ हमें उस समृद्ध परंपरा के दर्शन होने लगे हैं। और, ये इतना कुछ 10-12 साल के भीतर-भीतर हुआ है।

हमारे सांस्कृतिक केन्द्रों की उपेक्षा देश के विकास में बड़ी बाधा रही है। क्योंकि, हमारे तीर्थ भारत की आध्यात्मिक-सामाजिक व्यवस्था के केंद्र तो हैं ही, वो देश की आर्थिक प्रगति के भी स्रोत रहे हैं। चारधाम महामार्ग परियोजना, गोविंदघाट से हेमकुंड साहिब तक रोपवे परियोजना, करतारपुर कॉरिडोर, बौद्ध सर्किट का विकास, इनके जरिए देश में तीर्थ क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ी हैं। सोमनाथ परिसर भी इसका एक सशक्त उदाहरण है। सोमनाथ मंदिर ट्रस्ट से सैकड़ों परिवार जुड़े हैं। हजारों लोगों का जीवन इस क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। देश-दुनिया के कोने-कोने से जो लोग यहाँ आते हैं, वो गुजरात के बाकी हिस्सों में भी जाते हैं। इससे प्रदेश और देश में प्रगति के नए द्वार खुलते हैं।

हमारी आस्था हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। क्योंकि, हम मानते हैं- सर्वं खल्विदं ब्रह्म ! अर्थात् सृष्टि का हर एक घटक, ये सम्पूर्ण प्रकृति भी ईश्वर का ही स्वरूप है। इसलिए, हमारी आस्था नदियों में भी है, वृक्षों में भी है। हम जंगलों को भी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। हम पर्वतों में भी पवित्रता का भाव रखते हैं। और, आज जब दुनिया प्राकृतिक जीवनशैली की ओर लौट रही है, हमें हमारी इस शक्ति को भी पहचानना होगा। हमें हमारे तीर्थों और मंदिरों के विकास के साथ-साथ उनकी गरिमा के लिए जागरूक होना होगा। हम ऐसा जीवन अपनाएं, जिससे प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा हो। साथ ही, हम हमारे पुण्य स्थलों को पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण के रूप में विकसित करें। हमें इन संकल्पों को अपनी आस्था से जोड़कर जीना होगा।

जब नई पीढ़ियां अपने इतिहास, अपनी आस्था और अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ती हैं, तब राष्ट्र का आत्मबल और मजबूत होता है। आज भारत जिस आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है, उसमें हमारी इस सांस्कृतिक निरंतरता की भी बहुत बड़ी भूमिका है। आधुनिक और विरासत, आधुनिकता हो या विरासत हो, भारत में इसे कोई अलग नहीं कर सकता, भारत में एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, ये साथ-साथ आगे बढ़ने वाली शक्तियां हैं, एक दूसरे में प्राण पूरने वाली शक्तियां है। सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र तभी लंबे समय तक मजबूत रह सकता है, जब वो अपनी जड़ों से जुड़ा रहे। जब हम अपनी विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक उसी श्रद्धा और विश्वास के साथ उनके हाथों में सुपुर्द करें। 75 वर्ष पहले, जब ये पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर में, प्राण प्रतिष्ठा हुई थी, तब भारत ने एक नई चेतना यात्रा शुरू की थी। आज, 75 वर्ष बाद, वही यात्रा और अधिक व्यापक रूप में हमारे सामने है। हमें इसे नई ऊंचाई पर लेकर जाना है। हमारे संकल्पों को पूरा करने में दादा सोमनाथ का आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहे, यही प्रार्थना है। ▪

सोमनाथ स्वाभिमान का प्रतीक - डॉ. मोहन यादव

- **सृजन शक्ति हमेशा प्रभावी होती है विनाशकारी शक्ति से।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में जारी है विरासत से विकास की महत्वपूर्ण यात्रा।**
- **महाकाल महालोक से सुदृढ़ हो रही एकता की भावना।**

सोमनाथ हमारी प्राचीन विरासत, आस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। सोमनाथ साक्षी है कि सृजन शक्ति हमेशा विनाशकारी शक्ति से प्रभावी होती है। सोमनाथ की प्रत्येक ईंट, भक्ति का ताप और भारत के पुनरुत्थान का गौरव कहती है। इतिहास में कई बार मंदिर को क्षति पहुंचाने का प्रयास किया गया, लेकिन प्रत्येक विध्वंस के बाद यह मंदिर और अधिक भव्यता के साथ उठ खड़ा हुआ। सत्रह बार आक्रमण के बाद भी शाश्वत शिव यहीं विराजते हैं। मंदिर के इतिहास में वर्ष 2026 खास महत्व रखता है। एक हजार वर्ष पहले 1026 में पहली बार मंदिर पर आक्रमण हुआ था। इसी वर्ष जनवरी में आक्रमण के ठीक एक हजार वर्ष बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सोमनाथ में भव्य स्वाभिमान पर्व मनाया गया। बाबा सोमनाथ की दिव्यता और भव्यता आज भी अलौकिक और अद्वितीय है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में विरासत से विकास की यात्रा जारी है। भारतीय सनातन संस्कृति ''जियो और जीने दो'' की संस्कृति है। भगवान के जप, सत्संग, कीर्तन के साथ परस्पर स्नेह और प्रेम के वातावरण में की गई यात्रा सभी भक्तों के लिए अविस्मरणीय रहेगी। हम अपने जीवन का उपयोग भाईचारे के साथ कल्याणकारी कार्यों में करें और सम्पूर्ण मानव जाति को परिवार की तरह देखते हुए जीवनयापन करें, यही भारतीय संस्कृति का मूल्य है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में जारी सांस्कृतिक जागरण का अभियान राष्ट्रीय एकता को निरन्तर सुदृढ़ कर रहा है। भगवान श्रीराम के अयोध्या धाम और भगवान श्रीकृष्ण की मथुरा के साथ ही बंगाल के कालीघाट तक सनातन संस्कृति की ध्वजा चारों तरफ लहरा रही है। गंगोत्री से गंगा सागर तक यह भाव सर्वत्र व्याप्त है।

राज्य सरकार द्वारा धार्मिक स्थलों के लिए हेलिकॉप्टर सेवा आरंभ की गई है। इंदौर से उज्जैन, ओंकालेश्वर, महाकालेश्वर और भोपाल से ओरछा-चंदेरी तथा जबलपुर से मैहर की माता और कान्हा किसली तथा पेंच के लिए हेलिकाप्टर सेवा उपलब्ध है। राज्य सरकार ने 13 धार्मिक लोक का निर्माण कराया है। बाबा महाकाल का महालोक बनने के बाद उज्जैन की अर्थव्यवस्था में बड़ा बदलाव आया है। वर्तमान में प्रतिदिन डेढ़ लाख से अधिक लोग उज्जैन में दर्शन के लिए पधार रहे है। इससे होटल, ऑटो, ठेले वाले आदि सभी के व्यवसाय में वृद्धि हो रही है। महाकाल महालोक देश के विभिन्न भागों में रह रहे लोगों के मध्य आपसी सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अवसर उपलब्ध कराकर एकता की भावना को भी सुदृढ़ कर रहा है, यही एकता की भावना एकात्मता में परिवर्तित हो रही है। ■

राष्ट्र सेवा के सफल 12 वर्ष - डॉ. मोहन यादव

प्रदेशवासियों की ओर से प्रधानमंत्री श्री मोदी का अभिनंदन

देशवासियों की आशा के प्रतीक प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में विगत 12 वर्षों में भारत ने विकास के साथ आत्मनिर्भरता, सुरक्षा, सांस्कृतिक गौरव, डिजिटल क्रांति और वैश्विक नेतृत्व के नए आयाम स्थापित किए हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में डिजिटल इंडिया से गांव-गरीब तक तकनीक की पहुंच सुनिश्चित हुई है। अंत्योदय की भावना के साथ अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचा है। राष्ट्र प्रथम की भावना से GYAN मंत्र में गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति के उत्थान तक, सीमाओं की सुरक्षा से नक्सल व आतंक मुक्त भारत के निर्णायक परिणाम तक, भारत ने अनेक ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। आज भारत वैश्विक मंचों पर निर्णायक नेतृत्व कर रहा है और दुनिया भारत को विश्वास, विकास व वैभव के प्रतीक के रूप में देख रही है।

''विकसित भारत @ 2047'' के संकल्प को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी का दूरदर्शी नेतृत्व राष्ट्र को निरंतर नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहा है। ■

नरेन्द्र मोदी विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता

एरिक सोल्हेम

पश्चिमी देशों के नेताओं को नरेंद्र मोदी द्वारा पर्यावरण पर लगातार दिए जाने वाले जोर से बहुत कुछ सीखने की जरूरत है।

दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 18 मई 2026 की नॉर्वे की यात्रा पर King Harald ने उनका स्वागत किया। प्रधानमंत्री मोदी इस यात्रा के दौरान भारतीय व्यापारों को बढ़ावा देंगे, वहां रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों से मिलेंगे और भारत-नॉर्डिक देशों के प्रधानमंत्रियों की बैठक में हिस्सा लेंगे। नॉर्डिक देशों के प्रधानमंत्रियों को मोदी की बात ध्यान से सुननी चाहिए, क्योंकि उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

जहां नॉर्डिक देशों के प्रधानमंत्रियों की लोकप्रियता अपने देश में मुश्किल से 30 प्रतिशत तक है, वहीं मोदी की लोकप्रियता करीब 70 प्रतिशत है। दुनिया के किसी बड़े देश का नेता अपने देश में मोदी जितना लोकप्रिय नहीं है। मोदी पिछले 12 साल से ज्यादा समय से भारत की सत्ता में हैं। अगर वह फिर चुनाव लड़ते हैं, तो सभी संकेत बताते हैं कि उन्हें फिर से जीत हासिल हो सकती है। यूरोप के नेताओं के लिए यह केवल एक सपने जैसा है। उनकी सफलता के पीछे तेज आर्थिक विकास, मजबूत विचारधारा, दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी और उनकी निजी जीवन यात्रा का बड़ा योगदान है।

मोदी की पृष्ठभूमि दुनिया के ज्यादातर नेताओं से बिल्कुल अलग है। दुनिया के अधिकतर राष्ट्राध्यक्ष उच्च मध्यम वर्ग से आते हैं, लेकिन मोदी का बचपन बहुत साधारण था। उनके माता-पिता गुजरात के छोटे से कस्बे वडनगर के रेलवे स्टेशन पर चाय बेचते थे। यह कस्बा इतना छोटा है कि भारत में भी मुश्किल से कुछ ही लोग इसका नाम जानते थे। मोदी आज जहां हैं, वहां तक अपने खुद के बलबूते पर पहुंचे हैं और इसमें हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन का भी बड़ा योगदान रहा है। वह नॉर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री Einar Gerhardsen की तरह हैं खुद सीखने वाले और मजबूत संगठनकर्ता।

मोदी ऐसे समय में भारत का नेतृत्व कर रहे हैं जब देश तेजी से आगे बढ़ रहा है और इस विकास में उनका स्वयं का भी बड़ा योगदान है। भारत की अर्थव्यवस्था इस समय 7 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है जोकि चीन से भी तेज है और दुनिया की दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से काफी आगे है।

हालांकि विकास हर जगह समान नहीं है। भारत के अमीर और गरीब राज्यों के बीच बड़ा अंतर है। भारत के पास चीन जैसी बहुत बड़ी शिक्षित workforce नहीं है। यहां अब भी नौकरशाही ज्यादा है और भारत अभी तक वैश्विक बाजार में निर्यात के लिए कोई प्रमुख उद्योग विकसित नहीं कर पाया है। लेकिन अगर विकास की यह दर बनी रही, तो 2050 तक भारत की अर्थव्यवस्था चार गुना हो जाएगी। तब भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है और अमेरिका को चुनौती देगा।

मैं भारत के लगभग हर राज्य में गया हूं और हर जगह विकास के संकेत दिखाई देते हैं। नए और आधुनिक एयरपोर्ट बन रहे हैं। दूर-दराज के इलाकों तक अच्छी सड़कें पहुंच रही हैं। गुजरात में दुनिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क बन रहा है और आंध्र प्रदेश में दुनिया का सबसे बड़ा सोलर-विंड-हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट तैयार हो रहा है।

मोदी हरित विकास यानी ग्रीन ग्रोथ के सबसे बड़े समर्थक हैं। भारत आज दुनिया में सौर और पवन ऊर्जा का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। अगर भारत अमेरिका को पीछे छोड़कर दूसरे स्थान पर पहुंच जाए तो इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए। पिछले साल भारत में कोयले से होने वाला प्रदूषण पहली बार कम हुआ।

पश्चिमी देशों के नेता मोदी द्वारा लगातार दिए जाने वाले पर्यावरण संदेश से बहुत कुछ सीख सकते हैं। मैं कई सम्मेलनों में गया हूं जहां मोदी मुख्य वक्ता रहे हैं। मोदी लगभग कभी जलवायु समझौतों या उत्सर्जन की बात नहीं करते। वह लोगों से पर्यावरण बचाने के लिए त्याग करने की अपील भी नहीं करते। उनका संदेश साफ होता है कि भारत 1.5 अरब लोगों को गरीबी से बाहर निकाल सकता है और यह काम ग्रीन ग्रोथ के जरिए किया जा सकता

है। अब अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच चुनाव करने की जरूरत नहीं है।

अगर अगला चुनाव धर्मनिरपेक्ष पार्टियां जीत भी जाएं, तब भी भारत की मुख्य विचारधारा हिंदू राष्ट्रवाद ही रहेगी। हिंदू राष्ट्रवाद उस सवाल का भारत का जवाब है जिसका सामना औद्योगिक क्रांति के बाद लगभग हर गैर-पश्चिमी देश ने किया। सवाल यह था कि आधुनिक कैसे बनें, लेकिन पूरी तरह पश्चिम जैसा बने बिना। इस रास्ते को सबसे पहले जापान ने अपनाया। जापान आधुनिक भी बना और अपनी संस्कृति से भी जुड़ा रहा। आज दक्षिण कोरिया जापान से ज्यादा अमीर है और अपनी संस्कृति व संगीत को पूरी दुनिया तक पहुंचा रहा है। चीन भी अपनी आधुनिकता को कन्फ्यूशियस विचारधारा, ताओवाद और बौद्ध धर्म जैसी अपनी परंपराओं से जोड़ता है।

भारतीय जनता पार्टी (BJP) इस समय दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। इसके 10 करोड़ से ज्यादा सदस्य हैं। उत्तर और मध्य भारत के हर क्षेत्र में पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता मौजूद हैं। भाजपा ने भारत में एक अनोखी सफलता हासिल की है। उसे ऊंची जातियों, पिछड़ी जातियों और दलित समुदायों से एक समान समर्थन मिलता है। पार्टी को भारत के अरबपतियों का भी समर्थन है और दूरदराज के आदिवासी इलाकों का भी।

पश्चिमी देशों के कई विश्लेषक भाजपा की आलोचना करते रहते हैं। आलोचक एक बात उचित कहते हैं कि भाजपा हिंदुओं को एकजुट करने की बात करती है। लेकिन ऐसा कोई बड़ा प्रमाण नहीं है कि भाजपा के शासनकाल में हिंदू-मुस्लिम संघर्ष बढ़े हों। कांग्रेस के समय ज्यादा हिंसा और दंगे हुए थे। पड़ोसी देशों से लाखों मुसलमान भारत आ रहे हैं, जबकि बहुत कम मुसलमान भारत छोड़कर जा रहे हैं।

लेकिन भाजपा का यह कहना कि इस्लाम और ईसाई धर्म विदेशी धर्म हैं, और मुस्लिम आक्रमणों को ब्रिटिश शासन के बराबर मानना, कई मुसलमानों में असुरक्षा पैदा करता है। भाजपा के कई सुझाव सामान्य समझ वाले लगते हैं। जैसे कि यह विचार कि कोई अलग विवाह कानून नहीं होना चाहिए जिसके तहत मुस्लिम पुरुष अन्य पुरुषों की तुलना में अधिक आसानी से तलाक ले सकें। लेकिन एक नए और मजबूत हिंदू पहचान वाले भारत के निर्माण में असली परीक्षा यह होगी कि क्या भाजपा दुनिया के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय- भारत के 20 करोड़ मुसलमानों को भी साथ लेकर चल पाती है।

भारत दुनिया का एकमात्र बड़ा और गरीब पूर्व ब्रिटिश उपनिवेश है जिसने लोकतंत्र का रास्ता चुना। इसका श्रेय ब्रिटिश शासन को नहीं दिया जा सकता। अगर ऐसा होता, तो पाकिस्तान, म्यांमार और खाड़ी देशों में भी लोकतंत्र होता। भारत लोकतांत्रिक इसलिए है क्योंकि लोकतंत्र भारतीय संस्कृति और परंपरा में गहराई से जुड़ा हुआ है।

आज की दुनिया में नॉर्वे जैसे देशों को नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए नए सहयोगियों की जरूरत है। नॉर्वे के व्यापार को भी नए अवसर चाहिए। ऐसे में भारत के साथ मजबूत संबंध दोनों देशों के लिए फायदेमंद हो सकते हैं। लेकिन इसके लिए केवल भाषण देने की नहीं, बल्कि भारत की बात सुनने की भी जरूरत है। अगर ऐसा हुआ, तो दोनों देशों के लिए कई नए अवसर खुल सकते हैं। ▪

(लेखक- नॉर्वे के पूर्व मंत्री हैं)

नरेन्द्र मोदी अपने आलोचकों को लगातार मात दे रहे हैं

बिल ड्रेक्सल

सालों से, पश्चिमी उदारवादी और भारत का विपक्ष, दोनों ही खुद को एक सिद्धांत से सांत्वना देते रहे हैं- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक तानाशाह हैं, भारत की अभिभूत करने वाली विविधता, किसी ''मजबूत नेता'' के शासन के साथ मेल नहीं खाती, और इसलिए, उनकी ''अनुदारवादी'' सोच का नतीजा स्वाभाविक रूप से उनके ही खिलाफ जाएगा।

इस सिद्धांत को शायद अब तक का सबसे बड़ा झटका 04-05-2026 को लगा, जब मोदी की भारतीय जनता पार्टी- जो इतिहास की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है- ने उन राज्यों में से एक पर जीत दर्ज की, जहाँ उनकी पार्टी के लिए पहुँच बनाना सबसे ज्यादा असंभव माना जाता था, एक बेहद स्वतंत्र और सांस्कृतिक रूप से अलग क्षेत्र, जिसकी आबादी कैलिफोर्निया, टेक्सास और न्यूयॉर्क की कुल आबादी से भी अधिक है। विपक्ष के लिए यही बेहतर होगा कि वह अपनी इस हार से कुछ सीखने की कोशिश करे।

04-05-2026, सोमवार की मतगणना ने सिर्फ एक राज्य में सत्ता बदलने से कहीं ज्यादा काम किया। दशकों से, भारत की सबसे ताकतवर क्षेत्रीय पार्टियाँ बीजेपी के राष्ट्रीय विस्तार के रास्ते में सबसे मजबूत बाधा रही हैं- ये ऐसी राजनीतिक पार्टियां हैं, जिनकी जड़ें स्थानीय स्तर पर बहुत गहरी हैं, जो अपने राज्यों की भाषा और पहचान को अच्छे से समझती हैं और जिनमें बीजेपी की मुख्य रूप से उत्तर भारतीय, हिंदी-भाषी संस्कृति अक्सर सेंध लगाने में नाकाम रही है। पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस, जिसका नेतृत्व प्रभावशाली ममता बनर्जी करती हैं, इनमें से सबसे प्रमुख थी, जिसने इस विचार को और मजबूती दी कि भारत की विविधता इतनी विशाल है कि कोई भी पार्टी इसे पूरी तरह से एक सूत्र में नहीं पिरो सकती- एक ऐसी पार्टी के लिए तो बिल्कुल भी नहीं, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की किसी विशिष्ट और आक्रामक दृष्टि को आगे बढ़ा रही हो। 04 मई 2026 को बनर्जी को पराजित करके, बीजेपी ने यह साबित कर दिया कि अब वह उन क्षेत्रीय और सांस्कृतिक बाधाओं को भी तोड़ सकती है, जो उसे आगे बढ़ने से रोकती थीं।

इस जीत से पहले भी, बीजेपी के उभार से जुड़े आँकड़े पहले से ही चौंकाने वाले थे। बीजेपी के 140 मिलियन सदस्य हैं, जो पूरी दुनिया की किसी भी राजनीतिक पार्टी से अधिक हैं, यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी- जो इसकी एकमात्र समकक्ष है- की तुलना में 40 प्रतिशत अधिक है। मानव इतिहास में किसी भी राजनेता की तुलना में मोदी को सबसे ज्यादा वोट मिले हैं, और यह अंतर सैकड़ों मिलियन का है। मॉर्निंग कंसल्ट के वैश्विक नेता अनुमोदन ट्रैकर में, मोदी ने कई सालों से दुनिया के हर दूसरे लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता को आसानी से पीछे छोड़ दिया है, भले ही उनका कार्यकाल कितना भी लंबा रहा हो। उन पैमानों के हिसाब से, जो लोकतंत्र में सत्ता का मतलब होते हैं, हिंदू दक्षिणपंथ पहले से ही समकालीन दुनिया का सबसे सफल राजनीतिक आंदोलन बन चुका है।

आलोचक इसके जवाब में कहते हैं- और उनके पास इसके कारण भी हैं- कि चुनावी सफलताएँ ही लोकतांत्रिक ताकत को मापने का एकमात्र तरीका नहीं हैं, और यह कि बीजेपी और व्यापक हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन ने भारत की उदार संस्थाओं, प्रेस की आजादी और बहुलवादी सामाजिक ताने-बाने को कमजोर किया है, जिसके तहत उनके शासन में अल्पसंख्यकों को बढ़ती हिंसा और भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।

वे आगे यह भी दावा करते हैं कि चुनाव उतने सरल नहीं हैं, जितने वे दिखते हैं और वे बीजेपी पर चुनावी प्रक्रिया को अपने पक्ष में झुकाने का आरोप लगाते हैं- जैसे कि चुनाव आयोग में अपने लोगों को बिठाना और एक ऐसी चंदा योजना तैयार करना, जिसने पार्टी को अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में भारी वित्तीय लाभ पहुँचाया। हालांकि, यह योजना अब खत्म हो चुकी है। पश्चिम बंगाल के चुनावों में भी एक विवाद खड़ा हो गया था, जब चुनाव आयोग ने मतदाता-सूची से लगभग 9 मिलियन नाम हटा दिए थे, जो मतदाताओं की कुल संख्या के लगभग 12 प्रतिशत थे। समर्थकों ने इस कदम का बचाव करते हुए कहा कि ये नाम दोहराव, अयोग्य या मृत मतदाताओं के थे, जबकि आलोचकों ने मुस्लिम अल्पसंख्यकों को वोट देने के अधिकार से वंचित करने के एक हथियार के तौर पर इसकी निंदा की, क्योंकि ये अल्पसंख्यक मुख्य रूप से विपक्षी पार्टियों को वोट देते हैं।

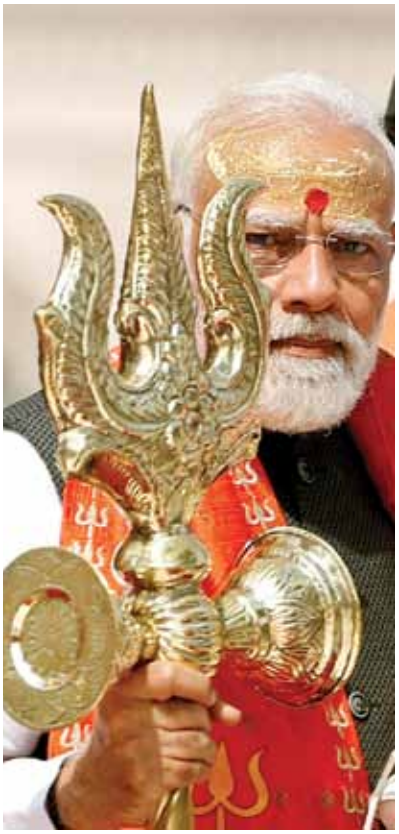

लेकिन बीजेपी की सफलताओं के पीछे केवल चुनावी रणनीति ही नहीं है। 04 मई 2026, सोमवार को पार्टी ने पश्चिम बंगाल की दो-तिहाई से ज्यादा सीटें जीतीं, और 50 साल से भी कम समय में एक छोटी सी पार्टी से बढ़कर 21 राज्यों का नेतृत्व करने वाली पार्टी बन गई - जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसने भारत को आजादी दिलाई थी, अब सिर्फ चार राज्यों तक सिमट गई है।

मुख्य प्रतिद्वंद्वी के साथ यह अंतर बहुत कुछ सिखाता है। कांग्रेस पार्टी को अपना प्रभुत्व विरासत में मिला था, इसने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया, भारत के अंग्रेजी बोलने वाले पढ़े-लिखे तबके का भरोसा जीता, देश के पहले 50 सालों में ज्यादातर समय तक राज किया, देश के लिए संस्थाएँ बनाईं- ये संस्थाएँ समाज को प्रबंधित करने के बारे में उस समय के लोकप्रिय अंतरराष्ट्रीय विचारों से प्रेरित थीं। बीजेपी ने अपना प्रभुत्व कड़ी मेहनत से बनाया- जमीन से जुड़कर, दशकों तक जमीनी स्तर पर संगठन बनाकर, और बड़ी मेहनत से एक ऐसा गठबंधन तैयार करके, जिसमें अब अलग-अलग जातियों, भाषाओं, क्षेत्रों और धार्मिक परंपराओं के लोग शामिल हैं- ऐसे लोग, जिनके पास अन्यथा साथ में मतदान करने का कोई खास कारण नहीं होता है।

इसकी आधारशिला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का संघ परिवार या 'संगठन परिवार' है। आरएसएस एक विवादित हिंदू राष्ट्रवादी स्वयंसेवी संगठन है, जो अब सौ साल पुराना हो चुका है। इसका मुख्य उद्देश्य लाखों कार्यकर्ताओं और दर्जनों ऐसे संगठनों को तैयार करना है, जो हिंदू समाज को पुनर्जीवित करने के इसके दृष्टिकोण को साकार करने के लिए समर्पित हों। बीजेपी के साथ मिलकर, आरएसएस उन अन्य संगठनों के नेटवर्क के जरिए अपना संदेश फैलाता है, जिनकी स्थापना उसने बीजेपी के साथ ही की थी, जैसे भारत का सबसे बड़ा मजदूर संघ, निजी स्कूलों का सबसे बड़ा नेटवर्क, सबसे बड़ा छात्र-संगठन और हिंदू धार्मिक नेतृत्व की सबसे प्रभावशाली परिषद- ये तो बस कुछ ही उदाहरण हैं। भारतीय समाज में जमीनी स्तर पर, वैचारिक और सामाजिक संबंधों का यह अनूठा ताना-बाना- जिसमें कठोर सौदेबाजी और गठबंधन बनाने की चतुर कला भी शामिल है- बीजेपी के असाधारण उदय की नींव रहा है।

जब भारत दुनिया की महान शक्तियों में अपनी जगह बना रहा है, ठीक उसी समय बीजेपी अपनी सत्ता को और मजबूत कर रही है, आबादी के हिसाब से सबसे बड़ा, सैन्य कर्मियों के हिसाब से दूसरा सबसे बड़ा, अर्थव्यवस्था के संदर्भ में तीसरा सबसे बड़ा बनने की राह पर, और एशिया में चीन का संतुलन करने की क्षमता रखने वाला एकमात्र देश। पश्चिम बंगाल में 04 मई 2026, सोमवार को मिली जीत यह दिखाती है कि बीजेपी का उभार अभी अपनी उच्चतम सीमा तक नहीं पहुँचा है।

बीजेपी के विरोधी उस न्याय की प्रतीक्षा कर सकते हैं, जिसकी भविष्यवाणी वे लंबे समय से करते आ रहे हैं। वह समय आ भी सकता है। लेकिन जो कोई भी मौजूदा हालात को देख रहा है, उसे इसके बजाय आने वाले दशकों के भारत- और एशिया में सत्ता के संतुलन- के लिए तैयार रहना चाहिए, जिसे काफी हद तक 'हिंदू दक्षिणपंथी' ही आकार देंगे। ■

(लेखक- बिल ड्रेक्सेल, अमेरिकी थिंक टैंक हडसन इंस्टीट्यूट में एक वरिष्ठ फेलो हैं। उनका मुख्य शोध कार्य अमेरिका-चीन तकनीकी प्रतिस्पर्धा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और अमेरिकी विदेश नीति पर केंद्रित है।)

गंगा दशहरा जल के प्रति कृतज्ञता का पर्व

डॉ. मोहन यादव

भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में नदियों को मात्र जल स्त्रोत नहीं, बल्कि देवी के रूप में पूजा जाता है। इनमें गंगा का स्थान सर्वोपरि है। गंगा दशहरा या गंगावतरण ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाने वाला प्रमुख त्यौहार है। इस दिन को गंगा दशहरा, गंगा दशमी या दशहरा के नाम से जाना जाता है। यह पर्व गंगा नदी के पृथ्वी पर अवतरण की स्मृति में मनाया जाता है। दरअसल, गंगा दशहरा जल के प्रति कृतज्ञता का पर्व है.

गंगा यानी पवित्र-साफ जल के इसी महत्व को समझते हुए यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय जन आंदोलन का रूप दिया है। उन्होंने जल को विकास का प्रमुख पैरामीटर बनाते हुए हर घर जल और जल है तो कल है के संकल्प को साकार किया। उनके नेतृत्व में जल शक्ति मंत्रालय का गठन, जल जीवन मिशन, नमामी गंगे, अमृत सरोवर मिशन और जल शक्ति अभियान जैसी ऐतिहासिक पहल हुई, जिन्होंने देश की जल सुरक्षा को नई दिशा दी है।

अमृत सरोवर योजना ने जल संरक्षण को नया आयाम दिया। प्रत्येक जिले में 75 जलाशयों के निर्माण या पुनरुद्धार का लक्ष्य रखा गया। अब तक 70 हजार से अधिक अमृत सरोवर तैयार हो चुके हैं। इनसे वर्षा जल संचयन, भूजल रिचार्ज और सिंचाई सुविधा बढ़ी है। यह मिशन आजादी का अमृत महोत्सव का हिस्सा है और सामुदायिक भागीदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है। नमामी गंगे परियोजना, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, नदी फ्रंट विकास और जैव विविधता संरक्षण के कार्य भी हो रहे हैं। इसी प्रकार प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत प्रति बूंद अधिक फसल का मंत्र दिया गया, जिसमें ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को बढ़ावा मिला। कैच द रेन अभियान ने वर्षा जल संचयन को जन आंदोलन बनाया। प्रधानमंत्री ने बार-बार कहा कि पानी बचाना स्वच्छ भारत मिशन की तरह सामूहिक दायित्व है। उनके मार्गदर्शन में लाखों जल संरचनाएं बनीं, चेकडैम, रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और पारंपरिक जल स्त्रोतों का पुनरुद्धार हुआ।

इन प्रयासों का परिणाम साफ दिखता है। भूजल रिचार्ज बढ़ा है, ओवर-एक्सप्लॉइटेड इकाइयों की संख्या घटी है और कई जिलों में जल संकट कम हुआ है। प्रधानमंत्री श्री मोदी का विजन केवल बुनियादी ढांचा निर्माण तक सीमित नहीं, बल्कि जल संरक्षण को संस्कृति और आदत बनाने का है। वे बच्चों को वाटर वॉरियर्स बनाने और समाज को जिम्मेदार बनाने पर जोर देते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जल संरक्षण भारत की विकास यात्रा का अभिन्न अंग बन गया है। ये प्रयास न केवल वर्तमान की जरूरतें पूरी कर रहे हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जल-समृद्ध भारत का आधार तैयार कर रहे हैं। जल संरक्षण अब मात्र नीति नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण का हिस्सा बन चुका है।

मध्यप्रदेश भी, जिसे प्राकृतिक जल संसाधनों से समृद्ध माना जाता है, जल संरक्षण की दिशा में अनुकरणीय पहल कर रहा है। जल गंगा संवर्धन अभियान एक राज्य स्तरीय जन आंदोलन है। वर्ष 2025 में यह अभियान 19 मार्च से 30 जून तक चलाया गया। चालू वर्ष-2026 में भी यह अभियान पूरे जोर-शोर से चल रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य जल स्त्रोतों का संरक्षण, संवर्धन और पुनर्जीवन करना है, ताकि प्रदेश जल संकट से मुक्त हो सके। अभियान के तहत नदियों, तालाबों, कुओं, बावड़ियों, चेकडैम और अन्य जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, गहरीकरण, स्वच्छता और सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। नए जल स्त्रोतों का निर्माण, वर्षा जल संचयन, भूजल रिचार्ज और पुरानी जल संरचनाओं का पुनरुद्धार अभियान के प्रमुख स्तंभ हैं। प्रदेश में 10 हजार से अधिक चेकडैम और स्टॉपडैम के संधारण, हजारों तालाबों के गहरीकरण, नई जल संरचनाओं का निर्माण और लगभग 2,500 करोड़ रुपये की लागत से बड़े पैमाने पर कार्य किए जा रहे हैं। ग्राम पंचायतों, नगरीय निकायों, जनप्रतिनिधियों, महिलाओं और युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई है।

मध्यप्रदेश कृषि प्रधान राज्य है। यहां की अर्थव्यवस्था और किसानों की समृद्धि जल पर निर्भर है। बढ़ती जनसंख्या, अनियमित वर्षा, भूजल स्तर में गिरावट और जल प्रदूषण ने जल संकट को गहरा दिया है। इस अभियान का महत्व इन्हीं चुनौतियों के समाधान में निहित है।

अभियान से वर्षा जल का अधिकतम संचयन होता है, जिससे सिंचाई सुविधा बढ़ती है। भूजल स्तर में वृद्धि से सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भी फसल उत्पादन संभव होता है। खेत तालाबों, रिज-टू-वैली मॉडल और जल संरक्षण संरचनाओं से किसानों की आय बढ़ रही है।

मध्यप्रदेश में प्राचीन बावड़ियां, तालाब और जल संरचनाएं सांस्कृतिक धरोहर हैं। उनका जीर्णोद्धार सांस्कृतिक गौरव बढ़ाता है और पर्यटन को बढ़ावा देता है। अभियान जनभागीदारी पर आधारित है। पानी चौपाल जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को कम पानी वाली फसलें, ड्रिप सिंचाई और आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जा रही है। इससे जल संरक्षण की संस्कृति विकसित हो रही है। महिलाओं और युवाओं की भागीदारी से सामुदायिक जिम्मेदारी बढ़ रही है।

इस अभियान से मध्यप्रदेश जल संरक्षण में देश का अग्रणी राज्य बन रहा है। अमृत सरोवरों के जल क्षेत्र में भारी वृद्धि, नदियों का पुनःप्रवाह और लाखों जल संरचनाओं का निर्माण राष्ट्रीय स्तर पर उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

यह अभियान केवल सरकारी प्रयास नहीं, बल्कि सामूहिक संकल्प है। यशस्वी प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में यह जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने में सफल हो रहा है। यह मध्यप्रदेश के भविष्य की नींव है। यह हमें सिखाता है कि जल ही जीवन है और उसकी रक्षा हमारा दायित्व है। यदि हम आज जल स्त्रोतों का संरक्षण करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियां समृद्ध जल संसाधनों का उपयोग कर सकेंगी। प्रदेशवासियों को इस अभियान से जुड़कर जल संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। स्वच्छ, समृद्ध और जल-सम्पन्न मध्यप्रदेश का सपना तभी साकार होगा जब हर नागरिक इसमें अपना योगदान देगा। ▪

(लेखक - मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

धार में विकास सुनिश्चित - डॉ. मोहन यादव

धार स्थित भोजशाला परिसर में राज्य सरकार भव्य सरस्वती लोक बनायेगी, यहाँ राजा भोज संस्थान की स्थापना भी की जायेगी। ऐतिहासिक भोजशाला पर माननीय उच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया है, राज्य सरकार इस न्यायिक आदेश का अक्षरशः पालन कराएगी। राजा भोजपाल द्वारा स्थापित यह भोजशाला सदियों तक ज्ञान-विज्ञान-अनुसंधान और संस्कृत भाषा का सबसे प्रखर केन्द्र रहा है। यह हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का अटूट प्रतीक है। यहाँ दूर-दूर से छात्र और विद्वान ज्ञान अर्जित करने और शास्त्रों पर विमर्श करने आते थे। राज्य सरकार भोजशाला के उसी गौरवशाली अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए सभी जरूरी प्रयास करेगी। राजा भोज की इस पुण्य धरा (धार) में अब चहुंमुखी विकास की नई धारा बहेगी। धार के आसपास पुरातत्व विभाग से समन्वय कर सभी प्रकार के विकास कार्य किए जायेंगे। राजा भोज जल संरक्षण के अग्रदूत थे। उनके द्वारा निर्मित विशाल जलाशय, तालाब और जल प्रबंधन की व्यवस्थाएं आज भी उनकी अद्भुत दूरदर्शिता एवं जल नियोजन का प्रमाण हैं। धार को किसी समय तालाबों की नगरी कहा जाता था। राजा भोज ने इस शहर में जलापूर्ति के लिए यहां साढ़े बारह तालाबों का निर्माण कराया गया था और इन्हें आपस में इस तरह से जोड़ा गया था कि एक तालाब भरने पर उसका अतिरिक्त पानी दूसरे तालाब में स्वतः चला जाता था। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान से प्रदेश में जल संवर्धन की नई क्रांति आएगी। धार राजा भोज की कर्मस्थली है, इसीलिए धार में राजा भोज शोध संस्थान की भी स्थापना की जायेगी। भोपाल में भी राजा भोज का संग्रहालय बनाया जा रहा है।

भोजशाला के लिए हुए आंदोलन में शहादत देने वाले तीन शहीदों स्व. श्री बनसिंह, स्व. श्री अंतरसिंह एवं स्व. श्री लक्ष्मण सिंह के निकटतम परिजन को राज्य सरकार की ओर से 5-5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी जावेगी।

धार में बनेगा भव्य सरस्वती लोक।
राजा भोज शोध संस्थान की स्थापना की जाएगी।
भोजशाला के लिए हुए आंदोलन में शहादत देने वाले तीन शहीदों के परिजन को दिये जायेंगे 5-5 लाख रुपये।
धार के आसपास होंगे सभी प्रकार के विकास कार्य।

माननीय उच्च न्यायालय के निर्णय से 750 वर्ष का संघर्ष सफल हुआ है। धार में नए युग की शुरुआत हुई है। धार अब प्रदेश में औद्योगिक श्रेणी में सबसे अग्रणी जिला बनकर उभरा है। राज्य सरकार मां वाग्देवी के आशीर्वाद से विकास के क्रम में आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। यहां भव्य माता सरस्वती लोक का निर्माण किया जाएगा। धार में राजा भोज शोध संस्थान भी बनाया जाएगा।

राजा भोज के द्वारा संरक्षित पुरातत्व के महत्व के अनेक स्थान और भोजपत्र हमारी धरोहर हैं। उन्होंने भोपाल के पास भोजपुर में विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग का निर्माण कराया। भोपाल के बड़े तालाब की निर्माण तकनीक देखकर दुनिया के बड़े-बड़े विद्वान अचंभित रह जाते हैं। राजा भोज ने 45 फीट लंबे लौह स्तंभ का भी निर्माण कराया, जिसके संदर्भ में अरब के इतिहासकार अलबलूनी ने कहा कि विश्व में ऐसा स्तंभ नहीं देखा, जिस लौह स्तंभ पर कभी जंग नहीं लगी। यह मालवा की धरोहर है। राजा भोज ने कवियों का सम्मेलन कराया और उनकी एक-एक रचना के लिए सोने की ईंट देकर पुरस्कृत किया। राजा भोज के अतीत की घटनाएं सभी को गौरवान्वित करती हैं। उन्होंने वीरता, धीरता, पराक्रमशीलता और गंभीरता के पैमाने पर उनका समवर्ती कोई राजा आसपास नजर नहीं आता है। दक्षिण में तमिलनाडु के पास भी एक भोज मंदिर देखने को मिलता है। ■

भोजशाला का वैभव लौटेगा - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी के विकास भी, विरासत भी को साकार करेंगे मां सरस्वती लोक व राजा भोज शोध संस्थान।**
- **सनातन संस्कृति की वैश्विक पहचान को और आगे ले जाएगी धार का भोजशाला।**
- **धार की सूरत बदलने का कार्य कर रही भाजपा सरकार।**
- **प्रधानमंत्री जी व मुख्यमंत्री राजा भोज के जल संरक्षण के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं।**

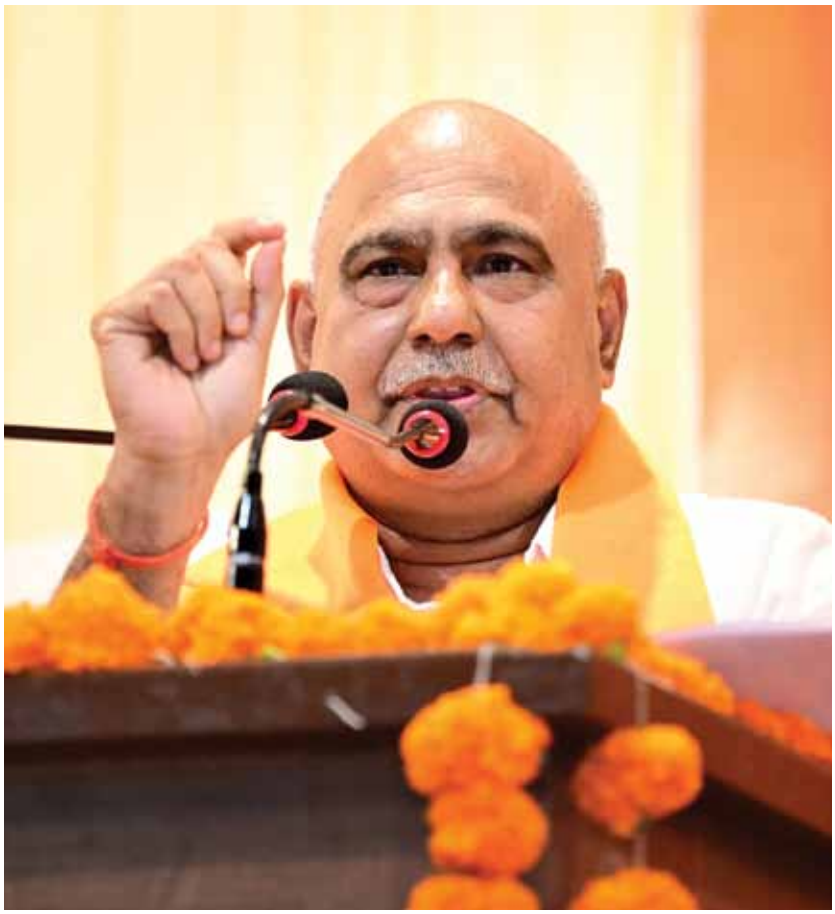

धार भोजशाला में मां वाग्देवी की पूजा-अर्चना करने के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने धार में मां सरस्वती लोक और राजा भोज शोध संस्थान बनाने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह निर्णय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकास भी विरासत भी के संकल्पों को साकार करने वाला कदम है। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने धार भोजशाला को मां सरस्वती का मंदिर होने का जो ऐतिहासिक फैसला दिया है, वह सनातन संस्कृति की वैश्विक पहचान को और आगे ले जाने वाला निर्णय है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार सनातन के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। धार भोजशाला आंदोलन में प्राणों की आहूति देने वालों के परिजनों को भी पांच-पांच लाख रूपए की आर्थिक सहायता की घोषणा उन बलिदानियों का सम्मान है, जिन्होंने सनातन की रक्षा के लिए अपने प्राणों का न्यौछावर किया था।

मां वाग्देवी के आशीर्वाद से सैकड़ों सालों का इंतजार समाप्त हुआ और न्यायालय के फैसले के बाद भोजशाला में प्रतिदिन पूजा-अर्चना शुरू हो चुकी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने धार में पीएम मित्रा पार्क की सौगात देकर जिले को विकास की मुख्य धारा में पहले ही शामिल कर चुकी है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार धार की सूरत बदलने का कार्य कर रही है। धार अब विकास और विरासत की अवधारणा को साकार करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा है। 750 साल के संघर्ष के बाद भोजशाला मां वाग्देवी के मंदिर के रूप में फिर से स्थापित हुआ है। धार अब उद्योग के साथ पर्यटन और साहित्य का केंद्र भी बनेगा। धार राजा भोज की नगरी है। राजा भोज, सम्राट विक्रमादित्य और हर्षवर्धन के कृतित्व व व्यक्तित्व से सनातन संस्कृति ने दुनिया के सामने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

राजा भोज ने जल संरक्षण के लिए कई जल संरचनाएं बनवाई हैं। भोपाल का बड़ा तालाब भी राजा भोज ने बनवाया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव राजा भोज के जल संरक्षण के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। मध्यप्रदेश में तीन महीने तक चलने वाला जल गंगा संरक्षण अभियान चल रहा है। इस अभियान के तहत प्रदेश भर के साथ धार में भी खेत तालाब, डगवेल रिचार्ज, सिंचाई संरचना, जल संरक्षण के काम हो रहे हैं। 64 प्राचीन बावड़ियों-64 प्राचीन तालाबों का संरक्षण और जीर्णोद्धार कर रहे हैं। यहां 88 करोड़ 4 लाख की लागत से बनने वाले 12 कार्यों का भूमि-पूजन किया जा चुका है। पूरे प्रदेश में जल संरक्षण के कार्य किए जा रहे हैं। भोजशाला को सनातन काल के समय का वैभव वापस दिलाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। ■

योजनाऐं जन-जन तक पहुंचाना जिम्मेदारी
- हेमंत खण्डेलवाल

- **सुनियोजित रणनीति से सुदृढ़ होगी संगठन और सरकार की छवि।**
- **मीडिया विभाग सूचना से परसेप्शन निर्माण का प्रमुख माध्यम।**

भाजपा प्रवक्तागण सुनियोजित रणनीति के साथ कार्य करें और संगठन व सरकार की सकारात्मक छवि को सुदृढ़ बनाने की प्राथमिकता रखें। वर्तमान दौर में मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह जनमानस में परसेप्शन निर्माण का एक अत्यंत प्रभावी साधन बन चुका है। ऐसे में हर स्तर पर सजगता, तत्परता और समन्वय बनाए रखना आवश्यक है। प्रवक्तागण नियमित रूप से फीडबैक लेते रहें और संगठन व सरकार के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करते हुए कार्य करें। देश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना सभी की जिम्मेदारी है। इसके लिए संभाग स्तर पर स्पष्ट जिम्मेदारियां तय की जानी चाहिए, ताकि कार्य अधिक व्यवस्थित, सुव्यवस्थित और परिणामकारी बन सके। सोशल मीडिया और मीडिया एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इसलिए दोनों के बीच संतुलन और समन्वय बनाए रखना बेहद जरूरी है। तभी संगठन की नीतियों और सरकार की उपलब्धियों को व्यापक रूप से जन-जन तक पहुंचाया जा सकेगा। पार्टी नेतृत्व के प्रवास के दौरान विषय वस्तु का सही और समयबद्ध तरीके से सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है, ताकि मीडिया में तथ्यात्मक, सकारात्मक और प्रभावी प्रस्तुति हो सके। प्रवक्तागण अपनी सक्रियता, जिम्मेदारी और समर्पण के साथ कार्य करते हुए संगठन की विचारधारा, नीतियों और उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाएं, जिससे संगठन और सरकार की विश्वसनीयता और साख और अधिक मजबूत हो सके। ■

संगठन सर्वोपरि की भावना आवश्यक
- डॉ. महेंद्र सिंह

भाजपा के मीडिया विभाग का प्रत्येक सदस्य संगठन का मजबूत और जिम्मेदार हिस्सा है। संगठन के कार्यकर्ता होने के साथ-साथ प्रदेश सह मीडिया प्रभारी एवं प्रदेश प्रवक्ता के नाते यह जिम्मेदारी और भी अधिक महत्वपूर्ण है। इस भावना को ध्यान में रखते हुए सभी को पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करना है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया और मीडिया का व्यापक प्रभाव है, इसलिए किसी भी विषय पर बात करते समय सटीक तथ्यों और प्रमाणिक जानकारी पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। जनता हमारी कार्यशैली और प्रस्तुति का लगातार मूल्यांकन करती है, इसलिए सकारात्मक संवाद, सतत संपर्क और स्पष्ट, संतुलित और प्रभावशाली प्रस्तुति हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। हमारा उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं है, बल्कि जनता में सकारात्मक धारणा बनाना भी है। संगठन और सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों को जन-जन तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना हमारी साझा जिम्मेदारी है। मध्यप्रदेश का मीडिया विभाग बेहतर कार्य कर रहा है, लेकिन इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए संगठित, सजग और सक्रिय प्रयास जरूरी हैं। भाजपा ने पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी जैसे राज्यों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है, वहीं अन्य राज्यों में मत प्रतिशत में निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देशभर में संगठन और सरकार की स्वीकार्यता बढ़ी है और आने वाले समय में यह प्रदर्शन और बेहतर होगा। ■

भाजपा के लिए राष्ट्र हित सर्वोपरि - हेमंत खण्डेलवाल

भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने का कार्य करता है। पार्टी कार्यकर्ता सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर गरीब, किसान, युवा, महिला और वंचित वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम बन रहे हैं। कार्यकर्ताओं की सेवा, समर्पण और संस्कारों से संगठन मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता संगठन की मजबूती के लिए कार्य करें, पार्टी संगठन कार्यकर्ताओं की चिंता कर रहा है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से ही भाजपा राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत पर चलते हुए जनता की सेवा कर रही है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता अपने-अपने बूथ, मंडल व शक्ति केंद्रों को और अधिक मजबूत करने के लिए कार्य करें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्ष 2047 तक भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी

के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने के लिए हम सभी कार्यकर्ताओं को अथक मेहनत करनी है।

प्रदेश के सभी जिलों में जिला प्रशिक्षण वर्ग चल रहे हैं। प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास बढ़ाता है साथ ही वैचारिक और संगठनात्मक मजबूती प्राप्त होती है। प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं व संगठन को नई ऊर्जा प्रदान करने में बहुत सहायक साबित होते हैं। भाजपा में व्यक्ति नहीं बल्कि संगठन सर्वोपरि होता है। संपर्क, संवाद एवं समन्वय संगठन की सबसे बड़ी ताकत हैं। भाजपा कार्यकर्ता केवल चुनाव के समय सक्रिय नहीं होते, बल्कि वर्ष भर समाज सेवा के कार्यों में जुटे रहते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकारें विकास और जनकल्याण की योजनाएं लगातार आगे बढ़ा रही हैं। ■

प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं से ही सशक्त संगठन - हेमंत खण्डेलवाल

- **देश की जनता भाजपा पर भरोसा करती है, इस भरोसे को हमें बनाए रखना है।**
- **संगठन को और बुलंदियों तक पहुंचाने कार्यकर्ता परिवार भाव से कार्य कर रहे।**

मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी संगठन के बताए अनुसार समय पर सभी बैठकें हम सभी कार्यकर्ताओं को सुनिश्चित करना है। संगठन को और बुलंदियों तक पहुंचाने के लिए पार्टी के सभी कार्यकर्ता परिवार भाव से सक्रियता के साथ कार्य कर रहे हैं। जिस तरह से समन्वय के साथ संगठन कार्य कर रहा है, वह प्रेरणा का कार्य करता है। मंडल स्तर की बैठक समय पर हो रही है। इनकी व्यवस्थित रिपोर्टिंग और कार्यकर्ताओं की निष्ठा से सभी कार्यक्रम सफल हुए हैं। आने वाले दिनों में होने वाले प्रशिक्षण वर्ग में संख्या अनुशासन और 100 प्रतिशत उपलब्धता से हम संगठन की आशाओं पर खरे उतरेंगे। प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन से लेकर समापन तक सर्वव्यापी, सर्व समावेशी और सर्वस्पर्शी अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण हमें प्रस्तुत करना है।

प्रशिक्षित कार्यकर्ता सशक्त संगठन का सृजन करते हैं। पार्टी कार्यकर्ता संगठन के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के जनकल्याणकारी व उल्लेखनीय कार्यों को जन-जन तक पहुंचाएं। भाजपा संगठन में प्रशिक्षण और सतत संवाद की प्रक्रिया है, जो भाजपा को अन्य दलों से अलग बनाती है। प्रशिक्षण और सतत संवाद से ही भाजपा आज दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन चुका है। ■

सेवा के लिए अच्छी नीयत व लगातार प्रयास जरूरी

पीएम मोदी ने 'मन की बात' में गर्मी से बचाव के टिप्स साझा किए, लोगों को दी हाइड्रेटेड रहने की सलाह

- झारखंड के रांची में आयोजित नेशनल सीनियर एथलेटिक्स फेडरेशन प्रतियोगिता में चार अलग-अलग स्पर्धाओं में चार राष्ट्रीय रिकॉर्ड टूटे।
- बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में सत्तू का शरबत बेहद शानदार पेय है। यह पेट भी भरता है और भरपूर ताकत भी देता है।
- नीदरलैंड में आयोजित एक विशेष समारोह में चोलकालीन प्राचीन ताम्रपट्टिकाएं भारत को वापस सौंपी गईं।
- हमारे देश में खगोल विज्ञान ने हर पीढ़ी में कौतूहल जगाया है। इसने एक्सप्लोरेशन के लिए प्रेरित किया है। आज के युवाओं में भी इसे लेकर काफी उत्साह दिखाई दे रहा है।
- डॉल्फिन रेस्क्यू एम्बुलेंस को एक मोबाइल हॉस्पिटल की तरह डिजाइन किया गया है। इसमें डॉल्फिन को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की गई है।
- जब हम गंगा डॉल्फिन को बचाते हैं, तो हम सिर्फ एक प्रजाति को नहीं बचाते, बल्कि गंगा की बायोडायवर्सिटी को भी सुरक्षित करते हैं।
- गिरिजा अम्मा जी की देशभक्ति की भावना हर भारतीय को प्रेरित करती है। 'मन की बात' से प्रेरित होकर उन्होंने देश के अनेक सैनिकों के लिए योगदान देने का संकल्प लिया।

इस समय देश के अधिकांश हिस्सों में भीषण गर्मी पड़ रही है। तेज धूप और गर्म हवाओं के बीच ऐसे मौसम में अपना विशेष ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

देश के अलग-अलग हिस्सों में हमारे देश के लोग देशहित में, समाजहित में, ऐसी अद्भुत चीजें कर रहे हैं और जब उनके विषय में सुनते हैं तो हमें एक नई प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम की शुरुआत, athletics में देश की ऐसी ही उपलब्धि से करूंगा। झारखंड, रांची में National Senior Athletics Federation Competition हुआ। इसमें करीब 800 athletes ने हिस्सा लिया- देशभर से आए थे। इस दौरान चार अलग-अलग event में चार national record टूटे। गुरिंदरवीर सिंह, विशाल टीके, तेजस्विन शंकर, देव मीणा और कुलदीप कुमार। इन्होंने अलग-अलग category में नए record बनाए।

महज दो दिनों के भीतर Men's 100 meter Race में national record तीन बार टूटा। जिन दो athletes ने ये कमाल दिखाया है वे हैं - गुरिंदरवीर सिंह और अनिमेष कुजूर।

प्रधानमंत्री – अनिमेष कुजूर जी, गुरिन्दरवीर सिंह जी आपकी जोड़ी ने बड़ा कमाल किया है।

अनिमेष जी – मैं 200 मीटर और 400 मीटर का National record holder हूँ and मैं छत्तीसगढ़ से belong करता हूँ। अभी मैं उड़ीसा से खेलता हूँ। मैं last year Asian Medal और World University Games Medal लेकर आया। मैंने athletics 2021 से चालू किया, मैं पहले football खेला करता था, मेरे parents

covid के समय मुझे थोड़ी बहुत छूट देते थे कि तू जाके बाहर दौड़ ले या खेल ले तो जब covid खत्म होने लगा तो मेरे football के जो friends थे उन्होंने मुझे बोला कि state meet होने वाला है जाके तू participate कर, मैं participate किया, मुझे पता नहीं था कि वहाँ से National level का Selection है। मैं वहाँ से National में select हुआ, आज मैं India को represent कर रहा हूँ Internationally।

प्रधानमंत्री– और गुरिन्दरवीर जी?

गुरिन्दरवीर– मैं Indian Navy में Patty Officer हूँ और मैं India का सबसे तेज sprinter हूँ, मैंने 100 मीटर में 10.09 का national record बनाया है, और मैं पहला Indian हूँ जो 10.1 के barrier के नीचे भागा है, और मैं कोशिश कर रहा हूँ कि मैं track और वर्दी में भी अपने देश की सेवा करूँ। मेरे father और grandfather दोनों sports करते थे तो हमारे India का culture है जब भी कोई त्योहार होता है जैसे दिवाली, जैसे नया साल तो हम अपने घर की सफाई करते हैं। तो मैं अपने father की Trophies और Medals की सफाई करता था तो मेरे को वो बहुत अच्छा लगता था, मैं बहुत खुश होता था। तब जब मैं कोई trophy साफ करता था तो मैं पूछता था कि भई ये trophy कहाँ जीती, ये Medal कहाँ जीता, ये photo कब की है, तो फिर मेरे को वो अपनी कहानी सुनाते थे, कि भई मैं यहां खेलने गया, मैंने ये National Medal जीता, मैंने अपनी team को इसमें जिताया। तो फिर मैं भी उनको बोलता था कि भई मैं भी कोई sports करनी है। वो running करने जाते थे morning में, तो मैं उनको बोलने लगा भई मेरे को भी लेकर जाया करो अपने साथ। तो मेरे को लेकर जाने लगे तो उन्होंने जो अपनी game sports में सीखा था तो मेरे को सिखाने लगे। तो मेरा interest बनने लगा। मैंने Usain Bolt का world record टूटता हुआ देखा।

मेरे father भी volleyball खेलते थे। घर की problems की वजह से उन्होंने अपनी sports छोड़ दी। उनका जो सपना पूरा करने वाला रह गया। तो उन्होंने मेरे अंदर वो सपना देखा भई मेरा बेटा वो सपना पूरा करेगा तो मैं उनसे बातें करता था, फिर सुनता था मिल्खा सिंह इतनी मेहनत करते थे, मैं उनको बोलता था मैं भी एक दिन आपका सपना पूरा करूंगा। तो बोलते सपना पूरा ऐसे नहीं होता, उसके लिए बहुत hard work करना पड़ता है। मेहनत करनी पड़ती है। मिल्खा सिंह जी खून की उल्टियाँ करते थे, धूप में भागते थे। सारा-सारा दिन training करते थे तो वो चीजें मेरे को inspire करती थीं। मेरे father मेरे को inspire करते थे, कि मैं भागूँगा तो अपने देश के लिए, देश के लिए Medal लाऊँ, जीतूँ। और ये भी था कि भई जब मैंने event choose किया 100 मीटर तो सभी मेरे को बोलते थे कि भई 100 मत करो, 100 Indians का event नहीं है। Indians की body 100 मीटर के लिए बनी ही नहीं है। तो मैं और मेरे father हमेशा बोलते थे कि अभी गुरिन्दर हमने ये choose किया है, हम इससे पीछे नहीं हटेंगे। जो हमें बोलते हैं कि भई हम नहीं कर सकते हम उसको कर के दिखाएंगे। और तू करके दिखाएगा, मुझे तेरे पे भरोसा है। तो वो भरोसा जब मेरे को मेरे father ने मेरे पर किया तो मैं उस भरोसे को अपनी हिम्मत बना के मैं चला और मैं आज हर Indian बोलता कि भई Indian Sprint कर।

प्रधानमंत्री – आप दोनों ने तीन बार National Record तोड़ा है। 100 मीटर race में दौड़ना, जैसा गुरिन्दरवीर ने कहा कि लोग कहते हैं कि भारत के लोगों का तो बदन इस काम के लिए है ही नही। इतना मुश्किल होते हुए भी आपने काम किया तो मैं जानना चाहूँगा, कि कौन सा जज्बा था, क्या जिद थी, क्या सोचा था, और कैसे कर रहे थे? ये कितना मुश्किल होता है?

गुरिन्दरवीर– starting में सर बहुत struggle था, बहुत बार doubt भी आया कि मैं सही कर रहा हूँ, मैं सही choose किया क्योंकि हर बार आप नहीं जीतते, कभी-कभी आप सीखते हो। जब मैं हारता था, जब मैं सही performance नहीं आती थी, कोई injury आ जाती थी तो मेरे घर वाले मेरे को support करते थे कि भई कोई नहीं एक दिन बुरा चला गया, एक साल बुरा चला गया तो इससे जिंदगी खराब नहीं होती। सपने देखना नहीं छोड़ते। तो मेरे coach ने भी मेरे को ये सिखाया कि अगर तू नहीं करेगा तो कोई और नहीं कर पाएगा। तो ऐसे जब हमारी community हमारे आसपास लोग हमें उत्साहित करते हैं तो हमारा कभी वो motivation नहीं टूटता।

अनिमेष – मुझे तो सारे लोग बोलते थे कि जब मैं 2021 में चालू किया athletics तो मुझे बोलते थे कि देख ये नया field है, तू कर पाएगा की नहीं, तो मैं बोला कि अब मैं इस field में घुसा हूँ तो करूंगा ही। मेरे पापा भी हमेशा मुझे बोलते थे कि तू इस field में घुसा है तो कभी पीछे मुड़के देखना मत क्योंकि सोचते तो सभी है की ये करना है, वो करना है but करके बहुत कम ही दिखाते है। तू बस इस field में घुसा है तो इस पे अमल रहना, इस पे आगे बढ़ना है। तेरे को सारी facilities, सब चीज हम support करेंगे, family support, financial support, सब चीज हम लोग करेंगे बस तू मेहनत कर और India को दिखा कि Indians भी भाग सकते हैं क्योंकि ये मुझे भी लोग बोलते थे कि Indians के genes ऐसे नहीं है कि वो Sub 10 या Sub 10.1 के अंदर भाग सकते है या कोई वो sprint कर सकता है but अभी हम दोनों ने ऐसा prove किया Indians भी कर सकते हैं। ऐसा कोई hard नहीं है हमारे लिए, हम भी सब कुछ कर सकते हैं। ये सारी चीजें मुझे बहुत motivate करती हैं, जैसे-जैसे हम training कर रहे हैं हम और timing तोड़ रहे हैं अपना and बाकी Indians को भी ये चीज दिख रहा है कि Indians भी कर सकते हैं and हम और करेंगे अभी, हम दोनों का selection commonwealth games के लिए भी हुआ है तो वहाँ upcoming competition में हम और अच्छा परफॉर्म करेंगे।

प्रधानमंत्री– आप दोनों अच्छे दोस्त भी है आप दोनों ने कुछ ठान रखा था क्या कि तुमने मेरा record तोड़ा तो मैं तेरा record तोड़ दूँ।

अनिमेष – पहले record 10.18 का था जो की मेरा ही था and then उसको गुरिंदरवीर भईया ने semi-final में तोड़ दिया 10.17 करके, मैंने फिर से उसको semi-final 2 में 10.15 करके तोड़ दिया तो उस समय जब मेरा semi-final हुआ तो हम दोनों ही खुश थे कि हां चलो ठीक है, आज record टूटा and चलो हम दोनों ने तोड़ा ऐसा, क्योंकि उस समय competition में rivalry रहती है but हम दोनों ठान के रखे थे पहले से ही उससे पहले हम लोग Saudi Arabia भी गए थे competition करने के लिए तो वहाँ भी हम दोनों roommates थे तो हम दोनों वहाँ भी बात करते थे कि India के sprinting को आगे लेकर जाना है and हमारे ही हाथों में है वो चीज हम जो करेंगे वही बाकियों को motivate करेगा ।

गुरिंदरवीर – हम दोनों ने decide किया था हम दोनों अच्छा भागेंगे। तो कभी भी सर

एक-दूसरे को जरूरत होती है तो एक-दूसरे के साथ खड़े होते हैं जैसे अभी record करने से पहले जब मैंने record किया फिर अनिमेश ने किया। तो जब हम warm-up कर रहे थे तो मैं अनिमेष को बता रहा था, अभी अनिमेष वो block सही है उस पे जाके बैठ वहाँ पे stride कर ले हम warm-up यहाँ पे करेंगे, यहाँ पर warm-up सही होगा तो एक-दूसरे की help करते है तो दूसरा भी improve करता है, हम भी improve करते हैं। तो दोस्ती भी चाहिए but सर हम ground के बाहर है, competition के बाहर है तो हम दोस्त हैं, जब हम ground में चले जाते है तो एक-दूसरे के competitor हो जाते हैं। तो यह होता है कि मैं इससे fast भागूंगा।

प्रधानमंत्री– देखिये आप लोगों ने जो स्पर्धा की है न वो देश का मान बढ़ाने के लिए की है, देश को भविष्य में इस जगह पर पहुँचाने के लिए की है और एक positive spirit से की है और मैं मानता हूँ कि आपका ये जो sportsman spirit है, खेलना भी है, एक-दूसरे को चुनौती भी देना है और फिर आगे निकलने के लिए प्रयास करना है और फिर आगे जाने के लिए एक-दूसरे की मदद करना है ये अद्भुत काम किया है आप लोगों ने।

तेज धूप, गर्म हवाएँ, ऐसे मौसम में अपना ध्यान रखना बहुत जरूरी है। पानी पीते रहिए। धूप में अगर निकलना ही पड़े तो थोड़ा संभल कर निकलें। इस दिशा में सरकार की भिन्न-भिन्न departments ने जो guidelines जारी की है वो भी भूलियेगा नहीं।

हमारे यहां गर्मी से लड़ने का तरीका रसोई में भी मिलता है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, वैसे-वैसे घर की रसोई का स्वाद बदल जाता है, रसोई का प्रकार बदल जाता है। कहीं मटके का पानी निकल आता है, कहीं दही जमने लगता है, तो कहीं कच्चे आम उबलने लगते हैं- और फिर शुरू होता है देसी पेय का दौर। उत्तर भारत में आपको मिलेगा आम पन्ना, कच्चे आम का स्वाद, और गर्मी से राहत भी। पंजाब-हरियाणा जाइए तो लस्सी मिल जाएगी, राजस्थान और गुजरात में छाछ, जैसे हर खाने की साथी बन जाती है। बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश में सत्तू का शरबत- पेट भी भरे, ताकत भी दे। कोंकण और गोवा में कोकम शरबत, सोल कढ़ी। दक्षिण भारत में पानकम, नीर मोर, सम्बारम और ओडिशा में बेल पना, वो सिर्फ पेय नहीं, भारत के अलग-अलग क्षेत्रों की परंपरा का हिस्सा हैं और इसमें 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना की झलक भी मिलती है। इनमें से ज्यादातर चीजें हमारी अपनी रसोई से निकली हैं, हमारे खेत खलिहान से निकली हैं। कोई बड़ी branding नहीं है, लेकिन पीढ़ियों का अनुभव उनमें समाया हुआ है।

गर्मी आते ही एक और चर्चा हर घर में शुरू हो जाती है और वो है आम। हर इलाके का अपना आम, अपना स्वाद, अपनी खुशबू। महाराष्ट्र और कोंकण का हापुस, alphonso, गुजरात का केसर, यह तो आमरस की जान है, उत्तर प्रदेश का दशहरी और काशी का लंगड़ा, बिहार का जर्दालू जिसकी खुशबू दूर से पहचान में आ जाए, चौसा, मालदा- हर नाम के साथ लोगों की यादें जुड़ी हुई हैं, दक्षिण भारत जाइए, तो बंगनपल्ली, तोतापुरी, नीलम, मलगोवा, बंगाल का हिमसागर, ओडिशा और आंध्र प्रदेश का सुवर्णरेखा, जगह बदलती है, आम का रूप-रंग और उसका स्वाद भी बदल जाता है। आम की ये यात्रा, अब गाँव से, global market तक भी पहुँच रही है। आम की पैदावार से जुड़े किसान देश की कृषि अर्थव्यवस्था के लिए आम किसान नहीं बहुत विशेष हैं।

एक ऐसी class, जिसमें आपका admission करने का मन कर जाएगा। एक ऐसा school जहाँ बच्चे भी आते हों, युवा भी और बुजुर्ग भी, जहाँ कोई fees ना हो, कोई बड़ी building ना हो, कोई classroom भी ना हो और सबसे रोचक बात, वहाँ class नदी में लगती हो। ये एक सच्चा प्रयास है। केरलम के आलुवा में, साजी वलाशेरिल जी ऐसा ही एक swimming club चला रहे हैं। अब तक 15 हजार से ज्यादा लोग यहाँ तैरना सीख चुके हैं। साजी जी ने दिव्यांग बच्चों को भी swimming सिखाई है । इस प्रयास के पीछे, एक पीड़ा भी छिपी है। कुछ वर्ष पहले, एक नौका हादसे में कई छात्रों की मृत्यु हो गई थी। उस घटना ने साजी जी को भीतर तक झकझोर दिया। उन्होंने सोचा, अगर बच्चों को तैरना आता होता, तो शायद कई जानें बच जातीं - बस यहीं से शुरू हुआ उनका ये अभियान।

साजी वलाशेरिल जी का जीवन, हमें एक बहुत बड़ी सीख देता है। सेवा करने के लिए बहुत बड़े साधन जरूरी नहीं होते - जरूरी होता है, एक अच्छा इरादा और लगातार किया गया प्रयास। इन्हीं के दम पर, हजारों लोगों के जीवन में बदलाव लाया जा सकता है ।

मुझे Europe के Netherlands जाने का अवसर मिला। इसी दौरान एक ऐसा क्षण आया जिसने हर भारतीय को गर्व से भर दिया। Netherlands में आयोजित एक विशेष समारोह में चोला काल की प्राचीन ताम्र पट्टिकाएं भारत को वापस सौंपी गई। उस कार्यक्रम में Netherlands के प्रधानमंत्री भी मौजूद थे। इन ताम्र पट्टिकाओं को लेकर लोगों में काफी जिज्ञासा भी है। इनमें 21 बड़ी और तीन छोटी ताम्र पट्टिकाएं हैं। ये मुख्य रूप से राजा राजेंद्र चोला-प्रथम द्वारा अपने पिता राजा राजराजा चोला के एक वचन को पूरा करने से जुड़ी हैं। इनमें आनइमंगलम् गांव को एक बौद्ध विहार को दान देने का उल्लेख है। इन ताम्र पट्टिकाओं में चोला वंश की उपलब्धियों का भी वर्णन मिलता है। इनसे पता चलता है कि चोला साम्राज्य की समुद्री शक्ति कितनी मजबूत थी। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ उनके संबंधों की जानकारी भी इनमें मिलती है।

चोला साम्राज्य के समृद्ध इतिहास और संस्कृति पर हम सभी को बहुत गर्व है। हमारी सरकार भारत की ऐसी अमूल्य धरोहरों के संरक्षण के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इसी क्रम में 'ज्ञान भारतम् अभियान' के तहत छत्तीसगढ़ के मल्हार में भी एक महत्वपूर्ण खोज हुई है। यहां तीन दुर्लभ ताम्र पट्टिकाएं मिली हैं। ये पांडुवंशी राजवंश के महर्षि बालार्जुन के शासनकाल से जुड़ी मानी जा रही हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि ये inscriptions छठी-सातवीं

सदी के हैं यानि चौदह-सौ, पंद्रह-सौ साल पुराने ये ताम्र पट्टिकाएं प्राचीन ब्राह्मी लिपि और पाली भाषा में लिखी गई हैं। इनसे उस समय की शासन-व्यवस्था, धर्म और संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

भारतीयों में खगोल विज्ञान, astronomy को लेकर हमेशा विशेष आकर्षण रहा है। हमारे देश में आज भी सदियों पुरानी observatories मौजूद हैं। यहां अद्भुत mathematical discoveries हुई हैं। Navigation हो, पंचांग हो, या हमारे पर्व-त्योहार, इन सबका संबंध आकाश और तारों से रहा है। हमारे यहां astronomy ने हर पीढ़ी में कौतूहल जगाया है। उसे exploration के लिए प्रेरित किया है और आज के युवाओं में भी इसे लेकर काफी उत्साह दिखाई देता है। आजकल, देशभर में astronomy Clubs तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक, स्कूलों से लेकर पार्कों तक इनकी गतिविधियां दिखाई देती हैं। मुझे Bangalore Astronomical Society के बारे में जानकारी मिली। यहां observational sessions आयोजित किए जाते हैं। इस संस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में astronomy को लोकप्रिय बनाने का mission भी शुरू किया है। 'खगोल मण्डल' नाम की एक टीम ने 30 घंटे का एक बहुत innovative course शुरू किया है।

रात में तारों को निहारना अपने आप में अद्भुत अनुभव होता है। Astro Kerala नाम की एक संस्था Night Observation Camps और workshops आयोजित करती है। युवा साथी Telescope बनाना और star maps का इस्तेमाल करना सीखते हैं। राजकोट के Big Bang Astronomy Club ने गिर के जंगलों से लेकर कच्छ के रण तक अनेक astronomy events आयोजित किए हैं। 'ज्योतिर्विद्या परिसंस्था' भी astronomy के सबसे पुराने संस्थानों में से एक है। यहां observational facilities के साथ-साथ books, library और telescope library की सुविधा भी है। ISAAC (आईसैक) एक student-led nationwide network है, जो, astronomy और astrophysics clubs को आपस में जोड़ता है।

अपनी hobby के लिए समय निकालना और लगातार कुछ नया सीखते रहना बहुत जरूरी है। युवा किसी astronomy club से जरूर जुड़ें, और किसी planetarium को भी जरूर देखने जाएं।

एक video जरूर देखिएगा। इसमें कुछ लोग बहुत धैर्य से, बहुत सावधानी से एक गंगा Dolphin को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। इस पूरे प्रयास में करीब 13 घंटे लगे, और आखिरकार वो dolphin बच गई।

इसमें बहुत बड़ी भूमिका रही- भारत की पहली गंगा dolphin rescue ambulance की। ये घटना उत्तर प्रदेश की है। वहाँ एक गंगा dolphin नहर में फंस गई थी। ऐसे समय में 'नमामि गंगे अभियान' के तहत बनी ये ambulance उसके लिए उम्मीद बनकर पहुंची। फिर बहुत सावधानी से उसे बाहर निकाला गया। उसकी जांच की गई, उसका इलाज किया गया और उसके बाद उसे सुरक्षित राप्ती नदी में छोड़ दिया गया। एक तरह से कहें, तो एक जीवन, फिर अपने घर लौट गया।

Dolphin rescue ambulance बहुत खास है। इसे एक चलते- फिरते अस्पताल की तरह तैयार किया गया है। इसमें Dolphin को सुरक्षित रखने की व्यवस्था है। Oxygen की सुविधा है, विशेष stretcher हैं, बचाव के उपकरण हैं, यानि अगर कोई Dolphin, घायल हो जाए, नहर में फंस जाए या नदी से कट जाए, तो तुरंत उसकी मदद की जा सकती है।

जब हम गंगा dolphin को बचाते हैं, तो हम सिर्फ एक प्रजाति को नहीं बचाते, हम गंगा की जैव विविधता को बचाते हैं। नदी के पूरे जीवन तंत्र को बचाते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति की एक अमूल्य धरोहर भी बचाते हैं।

उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के आकाश गुप्ता अपने गाँव की मनोरमा नदी को देखकर बहुत दुखी होते थे। क्योंकि जिस नदी को उन्होंने बचपन में साफ और जीवंत देखा था, समय के साथ उस नदी में प्लास्टिक जमा होने लगा था। गंदगी बढ़ती चली जा रही थी। श्रीमान आकाश ने तय किया कि शिकायत नहीं करेंगे, एक नई शुरुआत करेंगे। शिकायत नहीं, शुरुआत मंत्र बन गया। उन्होंने अपने दोस्तों को साथ लिया। सिर्फ जाल था, फावड़ा था, टोकरी थी और सबसे बड़ी ताकत थी, कुछ बदलने का संकल्प। ये युवा नदी में उतरते थे, जलकुंभी निकालते थे। प्लास्टिक और कचरा बाहर लाते थे। कई बार एक दिन में 50-60 किलो तक कचरा नदी से निकाला गया। धीरे- धीरे मनोरमा नदी का वह हिस्सा फिर से साफ दिखने लगा। आसपास के लोगों का ध्यान भी इस काम की तरफ गया। लोगों में स्वच्छता को लेकर जागरूकता बढ़ी।

ऐसी ही एक प्रेरक कहानी गोवा से सामने आई है। गोवा के बालकृष्ण अइया जी retired teacher हैं। लेकिन समाज के लिए काम करने का उनका उत्साह आज भी वैसा ही है। उन्हें मड्डी-तोलाप इलाके में पानी की समस्या बहुत परेशान करती थी। उन्होंने भी समाधान के लिए काम शुरू किया। बालकृष्ण जी ने pipeline बिछाने के काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे कई घरों तक पानी पहुंचा। जिन परिवारों को पानी के लिए रोज संघर्ष करना पड़ता था, उनके लिए यह बहुत बड़ी राहत बनी।

तमिलनाडु के नागरकोइल में मेरी मुलाकात एक टीचर से हुई। करीब तीन दशक पहले भी मैं उनसे मिला था। मैं बात कर रहा हूँ, गिरिजा अम्मा जी की। इस मुलाकात के दौरान कुछ युवा students भी उनके साथ थे।

गिरिजा अम्मा जी करीब 15 स्कूल चलाती हैं। इनमें चेन्नई का जयगोपाल गरोडिया हिन्दू विद्यालय बहुत प्रमुख है। उनकी देशभक्ति की भावना हर भारतवासी को प्रेरित करने वाली है। उन्होंने 'मन की बात' से प्रेरणा लेकर देश के अनेक सैनिकों के लिए योगदान का संकल्प लिया। इसके लिए उन्होंने अपने सभी स्कूलों के students को प्रेरित किया। उन्होंने बच्चों से कहा कि वे वीर जवानों के लिए हर दिन एक रुपया योगदान दे। यानी एक साल में हर student की ओर से 365 रुपये जमा हुए। इस छोटे-छोटे योगदान से करीब 40 लाख रुपये इकट्ठा हुए। गिरिजा अम्मा जी ने इस पूरी राशि का चेक मुझे सौंपा। उनसे बातचीत के दौरान मैंने महसूस किया कि माँ भारती के प्रति उनका समर्पण कितना गहरा है। पिछले वर्ष ही चेन्नई के पहले हिन्दू विद्यालय ने अपने 50 वर्ष पूरे किए हैं। देश की शिक्षा और सांस्कृतिक गौरव को आगे बढ़ाने में इस School network की भूमिका बहुत प्रशंसनीय है।

भारत के हर गाँव में, हर शहर में, कुछ-न-कुछ ऐसा हो रहा है जो हमें प्रेरणा देता है। कई बार, इन प्रयासों की ज्यादा चर्चा नहीं होती, लेकिन जब हम इन्हें जानते हैं, तो ये विश्वास और मजबूत होता है, कि देश, अपने लोगों की शक्ति से आगे बढ़ रहा है। अपने आसपास ऐसे प्रयासों को जरूर देखिए। जो लोग समाज के लिए अच्छा काम कर रहें हैं, उन्हें पहचानिए, उनकी सराहना कीजिए, उनसे सीखिए, और हो सके तो खुद भी किसी अच्छे काम से जुड़िए। ▪

हमारी सरकार जो कहती है वह करती है -डॉ. मोहन यादव

भावांतर योजना से किसानों को लाभ देकर वचन निभा रहे। गांव से शहर आकर अपना उत्पाद बेचने वाले किसानों को हेलमेट देगी सरकार।

- **'मन की बात' राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाला प्रेरणादायी संवाद।**
- **प्रधानमंत्री जी का संवाद देशवासियों को राष्ट्र निर्माण और सकारात्मक बदलाव के लिए करता है प्रेरित।**
- **सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता व महिलाओं का सशक्तिकरण कर रही है।**

हमारी सरकार जो निर्णय करती है, उसे लागू करती है। हमने 2625 रुपये क्विंटल के दाम देकर 1 करोड़, 4 लाख मीट्रिक टन से ज्यादा गेहूं खरीदी का रिकॉर्ड बनाया है। हमने अपने ही सारे रिकॉर्ड तोड़े हैं। पूरे देश में सबसे ज्यादा लगभग 14 लाख किसानों से गेहूं खरीदने का रिकॉर्ड भी मध्यप्रदेश सरकार ने बनाया है। यह हमारी सरकार के काम करने का तरीका है। सरकार सोयाबीन के लिए भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को लाभ देकर वचन को निभा रही है। सरकार उड़द को भी प्रोत्साहन दे रही है। पहली बार हम उड़द पर बोनस दे रहे हैं। दालों के उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में नंबर-1 है। हम उसमें और आगे बढ़ रहे हैं। एक तरफ हम खेती पर जोर दे रहे हैं, तो दूसरी तरफ कारखानों के माध्यम से दालों का उत्पादन भी यहीं करने की कोशिश कर रहे हैं। तुअर दाल के आयात पर कारखानों को टैक्स की छूट देकर हमने वचन निभाया। कपास से लेकर कई चीजों में सरकार सभी को लाभ दे रही है। आने वाले समय में बरसात के बाद जब रबी की फसल आएगी तब हम दिन में बिजली देकर किसानों को कठिनाइयों से मुक्त करेंगे। जिन्होंने उड़द लगाई, मूंग लगाया, उनका पंजीयन भी सरकार ने शुरू कर दिया है। हम मूंग की खरीदी भी करने वाले हैं। मूंग के साथ जो उड़द लगाया है, उसे हम 600 रुपये क्विंटल का विशेष बोनस देंगे।

भाजपा सरकार गरीब-युवा-अन्नदाता-महिलाओं के लिए भी काम कर रही है। किसान दूध-फल-सब्जी जैसे सामान मोटर साइकिल पर गांव से शहर लाते हैं। हेलमेट न होने की वजह से उन पर दुर्घटना का खतरा बना रहता है। सरकार हेलमेट देकर किसानों की जान बचाएगी। इस तरह दुर्घटनाओं को भी रोकेंगे और किसानों को सुरक्षा की गारंटी भी मिलेगी। दूध उत्पादन को लेकर भी सरकार योजनाओं पर काम कर रही है। सरकार आवारा पशुओं के लिए गौशाला बनवा रही है। गौ-माता का पालन करने वालों को प्रति गाय 40 रुपये रोज भुगतान कर रहे हैं। ताकि, गौमाता को भूखा न रहना पड़े। नेशनल डेयरी बोर्ड के माध्यम से दूध का कलेक्शन 15 लाख लीटर तक पहुंचाया है। हमें दूध उत्पादन में देश में 20 फीसदी का योगदान करना है। इस तरह किसानों की आय दूध के माध्यम से भी बढ़ रही है।

'मन की बात' के माध्यम से नवाचार, पर्यावरण संरक्षण, संस्कृति, विज्ञान, स्वच्छता, कृषि और सामाजिक सरोकारों जैसे विषयों पर देशवासियों को प्रेरक संदेश प्राप्त होते हैं, जो जन-जागरण और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को गति देते हैं। इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सकारात्मकता और राष्ट्रहित केंद्रित दृष्टि है। राजनीतिक विषयों से परे रहकर समाज, संस्कृति, नवाचार और जनसेवा से जुड़े प्रेरक उदाहरणों को प्रमुखता दी जाती है। यह कार्यक्रम देश में सकारात्मक सोच को मजबूत करने और नागरिकों को राष्ट्र निर्माण के अभियान से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन गया है। ▪

नवाचारों और राष्ट्र निर्माण के संकल्प को नई दिशा - हेमंत खण्डेलवाल

- **'मन की बात' से प्रेरणा लेकर राष्ट्रहित में कार्य करने का संकल्प लें कार्यकर्ता।**
- **प्रधानमंत्री जी के 'मन की बात' कार्यक्रम जनभागीदारी और सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 'मन की बात' के माध्यम से देशभर की प्रतिभाओं, नवाचारों और समाज एवं राष्ट्रहित में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों की प्रेरणादायक कहानियों को देश के सामने लाते हैं। यह कार्यक्रम वास्तव में जनभावनाओं का प्रतिबिंब है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन और जनभागीदारी को नई दिशा प्रदान करता है। यदि प्रत्येक नागरिक 'मन की बात' से प्रेरणा लेकर अपने क्षेत्र में समाज और राष्ट्र के हित में कार्य करने का संकल्प लें, तो विकसित भारत के निर्माण को नई गति मिलेगी। मध्यप्रदेश

के अधिकांश बूथों पर किसानों के घरों और खेतों में 'मन की बात' कार्यक्रम का सामूहिक श्रवण किया गया, जो भाजपा की जनभागीदारी की भावना को दर्शाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश के विभिन्न हिस्सों में पड़ रही भीषण गर्मी का उल्लेख करते हुए नागरिकों से स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने और आवश्यक सावधानियां अपनाने की अपील की है। उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित आमों की वैश्विक बाजारों तक बढ़ती पहुंच का उल्लेख करते हुए इसे भारतीय किसानों की मेहनत और कृषि उत्पादों की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय पहचान का प्रमाण बताया।

यह कार्यक्रम करोड़ों देशवासियों को सकारात्मक योगदान देने की प्रेरणा देता है।

प्रधानमंत्री जी ने नीदरलैंड्स से भारत को वापस सौंपी गई चोलकालीन ऐतिहासिक ताम्र पट्टिकाओं का भी उल्लेख किया, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने युवाओं में बढ़ते खगोल विज्ञान के प्रति आकर्षण और वैज्ञानिक सोच को देश के उज्ज्वल भविष्य का संकेत बताया। प्रधानमंत्री जी का 'मन की बात' कार्यक्रम आज देश की सकारात्मक कहानियों, नवाचारों, जनभागीदारी और राष्ट्र निर्माण के प्रेरक उदाहरणों का सशक्त मंच बन चुका है, जो करोड़ों देशवासियों को समाज और राष्ट्र के लिए सकारात्मक योगदान देने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने वरिष्ठ एवं प्रगतिशील किसानों का सम्मान कर उनके योगदान की सराहना की। ■

सकारात्मक सोच का प्रसार - डॉ. महेन्द्र सिंह

- **प्रधानमंत्री जी का 'मन की बात' कार्यक्रम समाज में सकारात्मक बदलाव का माध्यम।**
- **'मन की बात' कार्यक्रम जन-जन को नई प्रेरणा देने का कार्य कर रहा है।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' देश के करोड़ों नागरिकों को प्रेरित करने का प्रभावी माध्यम बन गया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी समाज के विभिन्न वर्गों की प्रेरक कहानियों, नवाचारों और सकारात्मक प्रयासों को देश के सामने लाते हैं, जिससे लोगों को नई दिशा और प्रेरणा मिलती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को नवाचार और जनभागीदारी की नई दृष्टि दी है। 'मन की बात' के माध्यम से स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, आत्मनिर्भरता, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक सरोकारों जैसे विषयों को बढ़ावा मिला है। इससे समाज में सकारात्मक सोच विकसित हुई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 'मन की बात' के माध्यम से युवाओं, किसानों, महिलाओं और समाज के हर वर्ग को आगे बढ़ने तथा राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यह कार्यक्रम विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ■

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली।

अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से संग्राम किया और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की किन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपनी झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया। भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

19 नवम्बर, 1835 को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही उसे घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हो गया। विवाह के बाद वह लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा।

जब वह 18 वर्ष की ही थीं, तब राजा का देहान्त हो गया। दुःख की बात यह भी थी कि वे तब तक निःसन्तान थे। युवावस्था के सुख देखने से पूर्व ही रानी विधवा हो गयीं। उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था, पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों की लार टपकने लगी। उन्होंने दामोदर राव को मान्यता देने से मनाकर झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से 50 कि.मी. दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया, पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया।

उसके पास साठ हजार सेना थी, पर रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये। इधर देश में जगह-जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन-चुन कर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया। रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली, पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे।

जनरल ह्यू रोज ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया. रानी दामोदर राव को पीठ पर बाँधकर 22 मार्च, 1858 को युद्धक्षेत्र में उतर गयी। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा, पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके।

नौवें दिन अपने बीस हजार सैनिकों के साथ तात्यां टोपे रानी की सहायता को आ गये, पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी से वह ग्वालियर आयीं। वहाँ 17 जून, 1858 को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी।

रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। रानी केवल 22 वर्ष और सात महीने ही जीवित रहीं. पर ''खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी.....'' गाकर उन्हें सदा याद किया जाता है। ▪

रानी दुर्गावती

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अत:रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं।

रानी दुर्गावती भारत की एक वीरांगना थीं जिन्होंने अपने विवाह के चार वर्ष बाद अपने पति दलपत शाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया। इनके शासन में राज्य की बहुत उन्नति हुई। दुर्गावती को तीर तथा बंदूक चलाने का अच्छा अभ्यास था। चीते के शिकार में इनकी विशेष रुचि थी। उनके राज्य का नाम गढ़मंडला था जिसका केन्द्र जबलपुर था। वे प्रयागराज के मुगल शासक आसफ खान से लोहा लेने के लिये प्रसिद्ध हैं।

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था।

दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती के इस सुखी और संपन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाजबहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी।

इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में गोण्डवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन 24 जून 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को भेद दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी है, जहां गोण्ड जनजाति के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर मे स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है। ▪

बिरसा मुंडा
वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग 'धरती बाबा' के नाम से पुकारते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत सारी औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है।

बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुयी थी।

मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया।

उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगो को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया 'रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो।' उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जाता है। अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था।

बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा 'हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमों का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजों, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर

चलें? कौन सा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्मशक्ति क्षीण हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतभेद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपने-अपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा की लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा संपूर्ण ध्यान तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही।

हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के संबंध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने संबंध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन-सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक विज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बने गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे-धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्‌गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी से मुलाकात की और समसामयिक विषयों पर चर्चा की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान-2026 के तहत जिला प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित किया।

▪ क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल जी ने जिला पदाधिकारियों एवं प्रबंधन कमेटी की बैठक में विस्तार से चर्चा की।

▪ प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान-2026 के अंतर्गत जिला प्रशिक्षण वर्ग को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने इंडिया से भारत एक प्रवास पुस्तक विमोचन समारोह को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी तथा भाजपा अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने निगम तथा मंडलों के नवनियुक्त पदाधिकारियों के उन्मुखीकरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने सवा करोड़ से अधिक बहनों के खातों में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की 36वीं किस्त अंतरित की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव जी ने कूनो नेशनल पार्क के क्वॉरेंटाइन बाड़े से 2 मादा चीतों को वन में स्वच्छंद विचरण के लिए विमुक्त किया।

'मोदीमय' भारत

भगवा लहर बंगाल तक पहुंची!